एक अनूठी सामाजिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय व साहित्यिक मासिक पत्रिका

ISSN 2277-7660

अमर ज्योति

► वर्ष 63

► अंक 11

► नवम्बर 2012

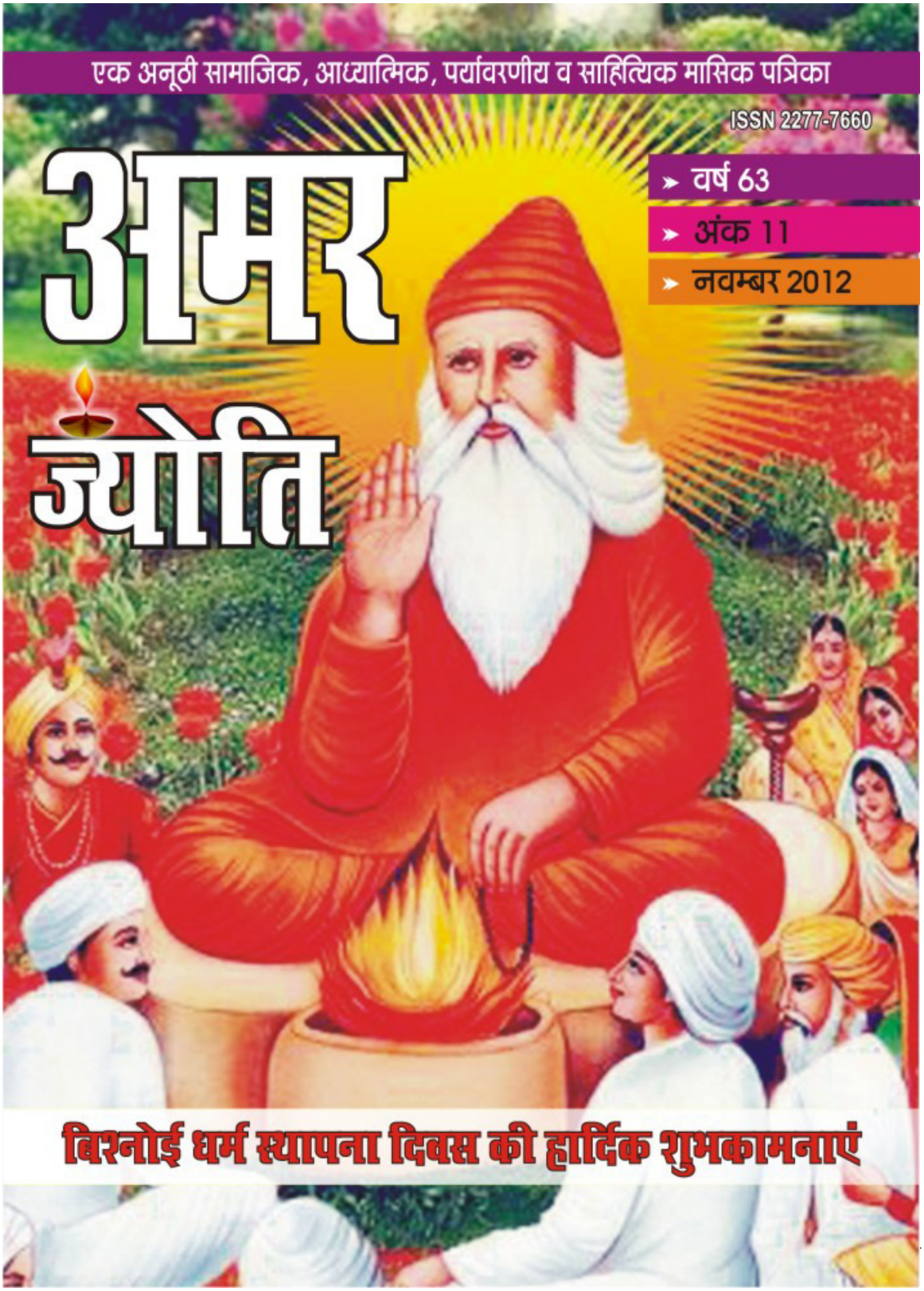

बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक

संदीप गोदारा

Mob.: 09466371529

सभा कार्यालय दूरभाष

Tel.: 01662-225804
E-mail.: editor@amarjyotipatrika.com
info@amarjyotipatrika.com
Website.: www.amarjyotipatrika.com

कार्यालय पता:

'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125001 (हरियाणा)

इस पत्रिका में व्यवस्थापक के अतिरिक्त उल्लेखित सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 70/-

आजीवन (50 वर्ष के लिए) सदस्यता शुल्क : 700/-

''अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें''

अमर ज्योति
श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार
1950

अमर ज्योति का ज्ञान दीप अपने घर आंगन में जलाइये

क्र.	विषय सूची	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	1
2.	सबद	2
3.	श्रद्धांजलि	4
4.	संत सुरजन जी के काव्य में.....	5
5.	अबकी बार दिवाली	8
6.	समाज में महिलओं की प्रस्थिति	9
7.	पर्यावरण का दर्द	11
8.	घर आगे इत गोवलवासो	13
9.	कुछ विचारणीय विषय	15
10.	जीवन के खेल को भी.....	16
11.	बधाई संदेश	17
12.	गौ भक्ति	18
13.	धार्मिक सहिष्णुता के प्रतीक	19
14.	नशा : नाश की निशानी	20
15.	घर में ही ईश्वर है	21
16.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	22
17.	जीव और ईश्वर	23
18.	पर्यावरण और प्रकृति	24
19.	धर्म का सच्चा वरण करो	25
20.	सामाजिक हलचल	26

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सम्पादकीय.....

पंथ चलायो राह दिखायी

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि जब-2 धर्म की हानि होती है, तब-2 उसकी पुनर्स्थापना हेतु परमात्मा इस धरा-धाम पर अवतरित होते हैं। भगवान के अवतार का उद्देश्य आसुरी वृति का निराकरण करना व भूली भटकी जनता को सद्पथ दिखलाना होता है। आज तक जब-2 मानवता अपने पथ से विचलित हुई है तब-2 परमात्मा ने वैकुण्ठ के सुख त्यागकर इस पृथ्वी पर अवतरित होकर मानवता की व अपने वचनों की रक्षा की है। मनुष्य एक साधारण जीव है, उसका भ्रमित होना, सद्पथ से भटकना, सांसारिकता में उलझना, मूल उद्देश्य को भूलना नितान्त स्वाभाविक है। ऐसी परिस्थितियों में केवल परमात्मा का आलोक ही उसका पथ आलोकित कर सकता है।

विक्रमीय संवत् की सोहलवीं शताब्दी में भी धर्म व मानवता पर घोर संकट के बादल मंडरा रहे थे। आपसी वैमनस्य अपनी चरम सीमा पर था, धर्म का स्थान बाहरी आडम्बरों ने छिन लिया था, परमात्मा को धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि में बांटकर रक्तपात का मूल बना दिया था, रही सही कसर पोंगापंथियो ने धर्म को व्यवसाय में बदलकर पूरी कर दी थी। अब भगवद् प्राप्ति हर किसी के लिए सुलभ नहीं थी। इस प्रकार के विषाक्त वातावरण के घोर तम में आम आदमी का दम घुट रहा था और उसे कोई पथ नहीं सूझ रहा था।

इस प्रकार के निराशाजनक वातावरण में डूबा मनुष्य एक ऐसे पथ की चाह में था जिस पर चलकर वह आत्म कल्याण के साथ-साथ पर कल्याण कर सके। अवसर की कृपा हुई - संकट व दुखों में घिरे आम आदमी की अर्न्वेदना को जानकर उसे राह दिखाने हेतु स्वयं भगवान विष्णु गुरु जम्भेश्वर के रूप में अवतरित हुए। सांसारिकता की ज्वाला से दग्ध हृदयों पर भगवद् कृपा की सुखद बौछार करते हुए गुरु जम्भेश्वर जी ने आज से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक बदी अष्टमी संवत् 1542 में संभराथल धोरे पर बिश्नोई पंथ का प्रवर्त्तन किया। स्वयं गुरु जंभेश्वर भगवान ने 'पंथ चलाये राह दिखायी' का उद्घोष कर इसे पथ, राह, मार्ग कहा है जिस पर चलने वाला मनुष्य अपनी मंजिल (मोक्ष) तक पहुँच जाता है। गुरु महाराज द्वारा पंथ की आचार संहिता के रूप में प्रदत्त 29 नियम मानवता व धर्म के कवच है, जो इनका पालन करता है वह 'जीये जुगति और मुवे मुगति' का अधिकारी होता है।

वस्तुतः गुरु जंभेश्वर जी ने बिश्नोई पंथ के माध्यम से उतम जीवन जीने की राह दिखाई थी। 527 वर्ष बीत जाने पर भी इस पंथ की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है अपितु और अधिक बढ़ी है। जैसी परिस्थितियां आज बनी हुई है उनको देखकर लगता है कि आने वाले समय में इसी प्रासंगिकता और अधिक बढ़ने वाली है। आज आवश्यकता है कि पूरा विश्व उस राह पर दृढ़ता से चले, जो गुरु जंभेश्वर जी ने 527 वर्ष पहले दिखाई थी।

गुरुवाणी

सबद – ।।

प्रसंग-हज काबै का हज करां , पाप न रहै लिंगार।
जम्बेश्वर यों बोलीया, इसका सुणों विचार।

हम मुसलमान लोग काबै जाकर हज कर आते हैं तो जीवन भर के किये हुऐ सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। तब गुरु जंभेश्वर ने सबद उच्चारण किया-

सबद-ओ३म् दिल साबत हज काबो नैड़ै, क्या उलंबंग पुकारे।

भावार्थ- यदि तुम्हारे दिल में सच्चाई है तो काबै का हज निकट ही है। जब तुम्हारा अपना अन्त:करण नजदीक ही है फिर उसे दूर समझ कर इतनी जोर से आवाज क्यों लगाते हो क्योंकि वह अल्ला तो तुम्हारे दिल में ही है।

सीने सरवर करो बंदगी, हक्क निवाज गुजारो।

उस परमपिता परमात्मा की प्राप्ति करना चाहते हो तो हृदय में प्रेम और दीनता से पुकार करो यही सच्ची प्रार्थना होगी। प्रतिदिन केवल नमाज अदा करने से तो कुछ कार्य सफल नहीं हो सकेगा। जब तक अपने जीवन में हक की कमाई नहीं करोगे, नमाज का अर्थ ही है कि हम अपने जीवन को शुद्ध परोपकारमय बनावे।

इंहि हैड़ै, हर दिन की रोजी, तो इस ही रोजी सारो।

ईमानदारी से भले ही कितना ही कठिन कार्य करना पड़े, वही कार्य अपने जीवन यापन के लिये उत्तम है। बेईमानी से किया हुआ कर्म जीवन को बरबाद कर देगा, वह अच्छा कैसे हो सकता है। जीवन में शारीरिक परिश्रम करके जो कुछ प्राप्त होता है वही संतोषजनक हो सकता है।

आप खुदाय बंद लेखौ मांगै, रे वीन्है गुन्है जीव क्यूं मारो।

स्वयं खुदा न्यायकारी आप से न्याय मांगेगा और पूछेगा कि रे प्राणी! तेरे को अमूल्य मानव जीवन दिया था। इस जीवन में तेने क्या क्या कर्म किये? रे हिंसक मानव! उन जीवों ने तेरा क्या अपराध किया था जिससे तुमने उनको मार डाला। तुझे किसी भी प्राणी को मारने का हक नहीं है, यदि तूं किसी को जीवन दान नहीं दे सकता तो मृत्यु देने का क्या हक है। यह अनाधिकार चेष्टा है।

थे तक जाणों तक पीड़, न जांणों, विन परचै वाद निवाज गुजारो।

आप लोग बल प्रयोग द्वारा प्राणियों को मारना तो जानते हो किन्तु उनकी पीड़ा को नहीं जानते अर्थात् आपके पास सहानुभूति नहीं है, अपने जीवन में कभी किसी सद्गुरु की बात का विश्वासपूर्वक श्रवण नहीं किया जिससे आत्मज्ञान प्राप्ति के बिना ही व्यर्थ में ही विवाद करते हो इसी प्रकार से अज्ञानी रहकर ही नमाज अदा करते हो तो इससे जीवन में कुछ भी लाभ नहीं होगा।

चर फिर आवै सहज दुहावै, जिसका खीर हलाली।
तिसके गले करद क्यूं सारौं, थे पढ़ सुण रहिया खाली।

जो माता तुल्य गऊ वन में चर कर आती है और वापिस आकर स्वभाव से ही अमृत तुल्य दूध देती है, उससे तुम लोग खीर आदि बना कर खाते-पीते हो फिर ऐसी परोपकारी माता के गले पर करद का बार भी करते हो तो तुम लोग पढ़-लिख, सुण कर भी खाली ही रह गये। तुम्हारा पढ़ना-लिखना व्यर्थ ही सिद्ध हो गया।

थे चढ़ चढ़ भीतें मड़ी, मसीते, क्या उलंबंग पुकारो।
कारण खोटा करतब हीणा, थारी खाली पड़ी निवाजूँ।

गऊ आदि जीव धारियों का मांस भक्षण करके फिर भीतों पर मेड़ी और मस्जिदों पर चढ़कर क्यों उलंबंग से पुकार करते हो, क्या वह खुदा तुम्हारी बात को कभी सुनेगा? क्या वह बहरा या अन्धा हो गया है जो तुम्हारे इन खोटे पाप कर्मो को नहीं सुनता और देखता। क्या वह तुम्हारे हृदय की बात को नहीं जानता। जब तक तुम्हारे कार्य कारण रूप से खोटे कर्म है, इन दुष्ट कर्मो का परित्याग नहीं करोगे तब तक तुम्हारा निमाज पढ़ना व्यर्थ है, इससे कुछ भी अच्छा फल मिलने वाला नहीं है।

किहिं ओजूं तुम धोवों आप, किहिं ओजूं तुम खण्डा पाप।
किहिं ओजूं तुम धरो धियान, किहिं ओजूं चीन्हों रहमान।

इस प्रकार से जीव हत्या करते हुए फिर आप लोग किस प्रकार से अपने को साफ करोगें तथा किस प्रकार से पापों का नाश करोगे? किस प्रकार से परमसत्ता परमेश्वर-

अल्ला का ध्यान करोगे और किस प्रकार से उस रहम करने वाले रहीम-राम को पहचान कर स्मरण करोगे। तुम्हारा अन्त: करण व शरीर इतना अपवित्र हो चुका है जिससे तुम्हारी इन शुभ कार्यों को करने की योग्यता समाप्त हो गयी है और न ही नमाज पढनें से पूर्व हाथ पांव आदि धोना रूप ओजूं से ही कुछ शुभ कार्य होने वाला है।

रे मुल्ला मन मांही मसीत नमाज गुजारिये, सुणता ना क्या खरै पुकारियें।

रे मुल्ला काजी! इस लोक दिखावा रूप उलबंग को छोड़ कर अपने मन रूपी मसीत में ही शांति तथा सावधानी पूर्वक निमाज पढिये। वह अन्तर्यामि खुदा क्या सुनता नहीं है? वह तो घट घट की बात जानने वाला है। तो फिर खड़े होकर जोर से पुकारने की आवश्यकता नहीं है।

अलख न लखियों खलक पिछाण्यों, चांम कटै क्या हुइयों।

मन बुद्धि द्वारा परमात्मा का अनुभव तो किया नहीं और संसार में ही दशों दिशाओं में वृति को भटकाता रहा, केवल संसार को ही सत्य सभी कुछ समझा तो फिर सुन्नत कराने से क्या लाभ हुआ।

हक हलाल पिछाण्यों नाहीं, तो निश्चै गाफल दोरै दीयो।

इस संसार में रहते हुए कर्तव्य-अकर्तव्य पाप-पुण्य हक्क -बेहक्क की पहचान तो की नहीं विवेक बुद्धि से तो कार्य किया नहीं, हे गाफिल! निश्चित ही तुझे खुदा-ईश्वर दौरे नरक में ही डालेगें।

-साभार जम्भसागर

शक्तिमान हो न्याय, सत्य की सदा विजय हो,
भ्रष्टाचारी गहन अंधेरा, क्रमशः क्षय हो।
राष्ट्रभक्ति की ज्योति, प्रकाशित हो हर हृदय में,
पावन दिवाली सभी को मंगलमय हो॥

सभी पाठकों व लेखकों को अमर ज्योति व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से दीपों के त्यौहार दीपावली व 527 वें बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ राजनेता, प्रतिष्ठित अधिवक्ता, समर्पित समाज सेवी रामानारायण बिश्नोई नहीं रहे

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व मंत्री व राजस्थान विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता व भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता रामनारायणजी बिश्नोई का 80 वर्ष की उम्र में 10 अक्टूबर को नई दिल्ली के एम्स में निधन हो गया। उनके निधन से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। वे एक समर्पित समाज सेवक थे। इस उम्र में भी वे अपने को समाज सेवा में लगाए हुए थे। वे पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। पहले जोधपुर व फिर गुड़गांव में उपचार करवाने के बाद उन्हें नई दिल्ली स्थित एम्स में भर्ती कराया गया था। वहीं उन्होंने 10 अक्टूबर को अंतिम सांस ली। वे अपने पीछे तीन पुत्र व पांच पुत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

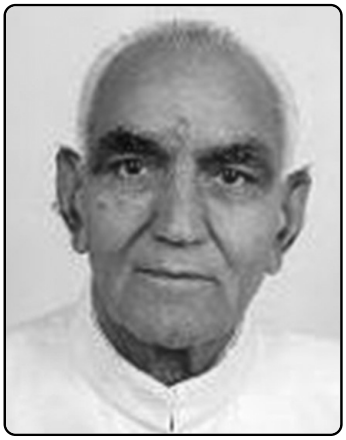

वे भले ही राजनेता थे लेकिन समाज उन्हें सदैव एक सेवक के रूप में याद रखेगा। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने जीवनपर्यंत एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाई। इसलिए वे बेस्ट सिटीजन ऑफ इंडिया चुने गए थे। नई दिल्ली में उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया था। उनका जन्म हनुमानगढ़ जिले के संगरिया मंडी में 1 जून 1932 को श्री हरभजरामजी गोदारा के घर हुआ। गोदारा मूल रूप से पंजाब के फिरोजपुर जिले के रामपुरा गांव के रहने वाले थे। रामनारायणजी की शिक्षा संगरिया कस्बे में अपने ननिहाल में हुई। डूंगर कॉलेज बीकानेर से बी.ए. एल.एल.बी. की डिग्री हासिल करने के बाद 1955 में वकालत के लिए जोधपुर चले गए। वे राजस्थान विधानसभा के लिए तीन बार चुने गए। वे मंत्री व विधानसभा के उपाध्यक्ष पद पर भी रहे। सबसे पहले वे जनता दल से जुड़े थे। पहली बार 1990 में जोधपुर की ओसियां विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुन गए। पहली बार भैरोसिंह शेखावत मंत्रिमंडल में ऊर्जा मंत्री बने। 11वीं विधानसभा 1998 से 2003 तक वे फलौदी विधानसभा क्षेत्र से चुनाव जीते। अगला चुनाव 2003 में भी वे फलौदी विधानसभा क्षेत्र से जीते। 1994 से 2004 तक वे विधानसभा की विशेषाधिकार समिति के सदस्य रहे। 12वीं विधानसभा में वे उपाध्यक्ष बने। वर्ष 1958 से 59 तक जिला परिषद जोधपुर के सदस्य भी रहे तथा 77 से 80 तक राजस्थान आवासन मंडल के सदस्य रहे। वकालत पेशे से जुड़े होने के बाद भी वे किसानों के लिए समय निकालते थे। गरीब व किसानों की मदद में उनकी तत्परता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वे कई मामलों में उनकी कोर्ट में निशुल्क पैरवी करते थे। भोपालगढ़ किसान यूनियन के लेवी आंदोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कारण उन्हें तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने नजरबंद कर दिया था।

वे अत्यन्त ही मृदुभाषी और समर्पित समाजसेवी थे। उनके निधन से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। महासभा सेवकदल, बिश्नोई सभा, हिसार, फतेहाबाद, पंचकूला, कुरूक्षेत्र, दिल्ली, सिरसा, डबवाली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश ने बैठक कर स्व. बिश्नोई के निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार गुरु महाराज से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दे और उनके परिजनों को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

संत सुरजन जी के काव्य में लोकमंगल की भावना

साहित्य अपने सही अर्थो में हित की भावना से जुड़ा हुआ होता है। मनुष्य का कल्याण ही सच्चे साहित्य की साधना होती है। हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल इसी कारण से स्वर्णयुग कहा जाता है कि इस काल का साहित्य लोकमंगल की भावना से गहरे रूप से सम्पृक्त है। 'लोकमंगल' दो शब्दों लोक + मंगल से मिलकर बना है। इसके अर्थ एवं आशय को समझने के लिए दोनों शब्दों पर विचार करना आवश्यक है। 'लोक 'शब्द अत्यन्त प्राचीन है। ऋग्वेद[1] में भी इसका प्रयोग हुआ है, जहां यह 'जन' का वाचक है। महाभारत[2] में लोक का प्रयोग जनसाधारण व जन समुदाय के लिए किया गया मिलता है, वहीं गीता [3] में इसका अर्थ संसार है। 'हिन्दी साहित्य कोश[4] में लोक का अर्थ संसार और जन सामान्य दोनों ही माना गया है। उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि लोक का विस्तृत अर्थ संसार है व प्रचलित अर्थ जनसाधारण है।

मंगल शब्द की व्युत्पति मग: गति + अलच् से हुई है जिसका अर्थ है सुख, सौभाग्य देने वाला, हर तरह से भला, शुभ[5]। संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर[6] के अनुसार मंगल का अर्थ है अभीष्ट की सिद्धि, कल्याण, भलाई आदि। मानक अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश के अनुसार मंगल का पर्याय है[7]- क्षेम, कुशल, आनंद, कल्याण, पुण्य, अच्छा, नेक, इष्ट, सौभाग्यदाय आदि।

इस प्रकार लोकमंगल का अभिप्राय हुआ-लोक अर्थात् जनसाधारण का कल्याण व भला। लोकमंगल की भावना स्वार्थ से दूर व दूसरों के उत्थान पर आधारित होती है। सभी मनुष्यों व जीवों पर दया-दृष्टि रखना, उन्हें आत्मवत् मानना, अत्याचार का विरोध, सभी के सुखसमृद्धि, उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना ही लोकमंगल है। संत सुरजन जी का काव्य लोकमंगल की उपर्युक्त कसौटी पर खरा उतरता है।

संत सुरजन जी का संबधं जांभाणी काव्यधारा से है जो गुरु जांभो जी की विचारधारा को लेकर आगे बढ़ी थी। गुरु जांभो जी का जीवन व सिद्धान्त लोकमंगल के प्रतीक है, अत: इससे अनुप्राणित साहित्य में भी लोकमंगल की भावना स्वाभाविक रूप से मिलती है। संत सुरजन जी का सम्पूर्ण साहित्य लोकमंगल की साधना है। उनकी दृष्टि में आम व्यक्ति था और उसका उत्थान ही उनकी लेखनी का ध्येय था। उनके काव्य में आदि से अंत केवल उन्हीं तत्वों का वर्णन है जिनसे आम-आदमी का कल्याण होता है।

लोकमंगल की राह आध्यात्मिकता से होकर गुजरती है क्योंकि अध्यात्म से अनेक विकारों का शमन स्वत: ही जाता है। संत सुरजन जी के काव्य का सबसे उदात्त स्वर भगवद् भक्ति का है क्योंकि उनका विश्वास है कि विष्णु भक्ति ही मनुष्य का वास्तविक कल्याण कर सकती है। बिना विष्णु भक्ति के सुरजन जी ने मानव जीवन को व्यर्थ माना है -

एक विसन की भगति बिना, सोह बकि गुमाये।[8]
साध संगति हरि भगति बिना, जमवारो जाये।।

संत सुरजन ने भगवान के नाम जपने को सुकृत की श्रेणी में रखा है और पल-2, क्षण-2 नाम जपने पर बल दिया है क्योंकि इसमें जीव का कल्याण निहित है -

संतो अैसा सुकरत कीजै,
पल-पल छिन-छिन घड़ी महूरति, विसनो विसन जपीजै।[9]

कवि ने मन, वचन और कर्म से एकचित होकर परमात्मा का भजन करके भवसागर से पार उतरने की विनती की है-

मन्सया वाचा क्रमना, रहणी एक धारा।[10]

जन सुरजन की वीनती, भज्य उतरौ पारा।।

लोकमंगल में सत्संग का अत्यन्त ही महत्व है क्योंकि मनुष्य एक भ्रमित होने वाला जीव है और सत्संग उसे समय-समय पर सचेत करके सही पथ दिखलाता है। लोकमंगल के आकांक्षी सुरजन जी ने इसलिए सत्संग पर अत्यधिक बल दिया है-

पाप संगत परहरो, सुसंगत नित कीजिये।[11]
कहे सुरजन करो करणी, मुक्ति मार्ग दीजिये।।
साबण साखी साधु जल, सतगुरु सरवर तीर।[12]
मन धोबी तन पाटड़ो, पावन कियो शरीर।।

''परोपकार सतां विभूतय:' कहकर परोपकार की महिमा घोषित की गई है। बिना स्वार्थ के दूसरों का कल्याण करना ही लोकमंगल की कसौटी है। संत सुरजन के काव्य में परोपकार की महिमा अनेक स्थानों पर वर्णित की गई है -

दीन गरीबी बंदगी, भजीयै एक धारा।[13]
पर उपगार विचारीयै, करिये प्रेम पियारा।।

सुरजन जी ने अपने एक कवित में लोकमंगल के सभी तत्वों को संजोकर रखा है-

पर निंदा परहरे, प्रेम उपगार चितारिस।[14]
मन मोह, अहंकार, मधि जो आपो मारिस।
दान, सील, तप, भाव, चित सुर भोंमि सिधारित।
मनसा वाचा क्रम, तीनी गुण ततं चितारिस।
मन्यसा देह करणी, मुकति, जुगति हींण जामै मरै।
बावनी ग्यांन प्रगसि बुधि, अरथ खोजी भव उधरै।।

लोकमंगल को ही सर्वोपरी मानने के कारण ही सुरजन जी ने पर निंदा को घृणित दृष्टि से देखा और एक हेय कार्य माना है। क्रोध के आवेग में आ कर किसी भी अन्य मनुष्य की निंदा करना अत्यन्त घृणित कार्य है जिसे वैर वैमनस्य बढता है तथा लोककल्याण में बाधा उत्पन्न होती है तथा प्रत्येक मनुष्य में प्रेम के स्थान पर बैर के बीज उत्पन्न होने लगते है। अत: सुरजन जी ने क्रोध को त्याग कर तथा उस पर नियन्त्रण करने का संदेश दिया है जो कि लोकमंगल का ही उदाहरण है।

क्रोध वैग विसहर कहर, ससंग ब्यावै सोय। [15]
इसडो कुण संसर मो, जहर गरासी होय।।

संत सुरजन जी का सम्पूर्ण काव्य मानव के उत्थान का महान प्रयास था। उन्होंने मधुर एवं चेतावनी परक ढ़ग से मनुष्य को जहां परोपकार, प्रेम, सुकृत एवं सृजनहार की भक्ति का संदेश दिया है वहीं पर निंदा, क्रोध का त्याग, इंन्द्रिय निग्रह जैसे कल्याणकारी संदेश भी दिया है।

सुरजन जी ने शील संतोष पर भी अपनी लेखनी चलाई तथा मनुष्य को शील संतोष धारण करने का आग्रह किया है जिससे मनुष्य को समाज में किसी भी कारण शर्मिंदा नहीं होना पड़ता। अत: यह भी लोककल्याण का ही विषय है वे कहते हैं-

'सहज सील संतोष सुक्रत, जुगतिओं तंन जांन्य' एक अन्य स्थान पर वे कहते है-

सील संतोष सहज की वाणी, सतगुरु कहयौ सो कीजै।।[16]

इसी प्रकार सुरजन जी ने इन्द्रिय निग्रह पर भी विशेष बल अपनी कविता में दिया है जिससे मनुष्य अपनी अनेक वासनाओं, कुठित विचारों, और इच्छाओं पर नियन्त्रण कर सके व आध्यात्म की ओर अग्रसर हो सके। अपनी इन्द्रियो पर नियन्त्रण करने के पश्चात् ही कोई मनुष्य स्वार्थ हीन लोक सेवा व भक्ति के पथ पर आगे बढ़ सकता है अन्यथा केवल अपने ही स्वार्थो को पूरा करने में लगा रहेगा। सुरजनजी भगवद् भक्ति के लिए इस इन्द्रिय निग्रह को आवश्यक मानते है।

इन्द्री पांच सुपह गहि आंणै,सहज्य भुवण जै सारै। [17]
सुरजनदास आस हरि सबदै, ओह गुण पारि उतारै।।

पाखण्ड एवं दिखावा मनुष्य को उसके मूल से भटकाते है। इसके जाल में फंस कर मनुष्य अपने समय शक्ति व अर्थ के साथ-साथ अपना जीवन तक गवा देते है। सुरजन जी के समय में भारतीय समाज पाखण्डग्रस्त

था। हिन्दू मन्दिरो में जा मूर्ति पूजा में लिप्त थे तो मुसलमान अपने मस्जिदो को बढ़ावा दे रहे थे, ऐसे मे सुरजन जी ने इन सब को छोड़ उस निरंजन, अगम, अगोचर की भी साधना पर बल दिया। वे कहते हैं-

पत्थर देह देहरा पथर कलस बणाया।
पूरब पीठ पछिम दिस सिरदा, हिन्दू धरम गुमाया।।18

वहीं दोनो सम्प्रदायो मे सद्भावना का संचरण करने हेतु उन्होंने भगवान को एक ही बताया और कहा कि किसी का भी भगवान अलग-अलग नहीं है वे तो एक ही है।

''अवधू जैसा गुरु हमारा, हिन्दू तुरक दहूँ तै न्यारा''[19]
क्षमा, दया भी उच्च मानवीय गुण है। जिससे समाज मे ईर्ष्या द्वेष समाप्त होकर, मानव प्रेम, सौहार्द व सद्भावना का संचरण होता है। इसीलिए जाम्भाणी साहित्य व सुरजन जी के काव्य में शील-सन्तोष के साथ-साथ क्षमा-दया को धारण करने पर बल दिया गया है।
'खिमां दया जरणां अर खेती, दीन पूरबलै पायौ।' [20]
तथा

''दान दया जरणा तप जाप, सुरजन मुगति हुवै मिटै पाप।।''[21]

सुरजन जी ने केवल मनोरंजन को काव्य की कोटी में नहीं रखा। ऐसा काव्य उन्हें कदापि स्वीकार नहीं था। वे तो लोकमंगल के कार्य व भगवत् भक्ति मे स्वयं को लीन करना चाहते थे। जैसा कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है, ''वह व्यवस्था या वृति जिससे लोक में मंगल का विधान होता है, 'अभयुदय' की सिद्धि होती है, धर्म है।''

अत: कविता का उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, लोकमंगल का विधान करना भी है। कविता ही मनुष्य को मनुष्यता के उच्च सोपान पर पहुंचाती है। इसी कारण तो तुलसी , कबीर, सूर जैसे महान भक्त कवियो ने अपने काव्य के माध्यम से मानव मात्र की मनुष्यता को जगाने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। सुरजन जी ने भी इस परम्परा का पूर्णत: निर्वाह किया है। इस महात्मा की वाणी ने हमें सद्पंथ एवं सन्मार्ग पर अग्रसर करने का जो कार्य किया, वह इनकी लोकमंगलकारी दृष्टि का ही सुपरिणाम है।

संदर्भ :- 1. ऋग्वेद, 3-53-12
2. महाभारत, आदि पर्व- 1-84
3. श्रीमद्भगवत्गीता, 3-13
4. (सपां.) डॉ.धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश,पृ. 686
5. (सपां.) श्याम सुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर (भाग-7): पृ. 3712
6. (सपां.) रामचन्द्र वर्मा, संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर,पृ. 781
7. (सपां.) सत्यप्रकाश; मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश; पृ. 1520
8. (सपां.) स्वामी कृष्णानंद आचार्य, साखी भावर्थ प्रकाश, पृ. 300
9. डॉ. हीरालाल महेश्वरी; जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य; पृ.772
10. (सपां.) डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई; महात्मा सुरजन जी के हरजस; पृ.7
11. (सपां.) कृष्णानंद आचार्य; पूर्वोक्त; पृ.285
12. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी; पूर्वोक्त; पृ.775
13. (सपां.) डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ; पूर्वोक्त, पृ. 7
14. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी; पूर्वोक्त; पृ. 788
15. वही; पृ.796
16. डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई; पूर्वोक्त; पृ. 33
17. वही; पृ.- 13
18. वही; पृ.-11
19. वही; पृ.-9
20. वही; पृ.-13
21. वही; पृ.-20

❑ **योगिता,** शोधछात्रा
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
चेन्नई, तमिलनाडू

अबकी बार दिवाली में

ममता समता मानवता का,
हर मन में पुष्प खिलाएंगे,
शुद्ध कर्मो के बल पर,
हम जीवन श्रेष्ठ बनाएंगे।
दुष्ट आचरण की चेष्टा।
है घोर पाप यह सोच हृदय।
नैतिकता के रास्ते चलकर,
हम धन वैभव यश पाएंगे।
भावों के पुष्प खिलाएंगे,
दीपदान की थाली में
ऐसा कुछ संकल्प करें हम,
अबकी बार दिवाली में।।

जन-जन के मन

दीप पर्व के अवसर पर, हम भी जशन मनाते है।
दीप जलाकर घर-घर में, लक्ष्मी पूजन करवाते है।।
प्रज्जवलित दीप दिवाली का, पौराणिक रंग दिखलाता है।
राम के हाथो रावण वध, की गाथा याद दिलाता है।।
मैदाने जंग बनी लंका, कालदेव ने वास किया।
रावण का वध कर रामचन्द्र नै, निश्चर दल का नाश किया।।
कहता है मानव सदा, रावण है नाम बुराई का।
राम बने प्रतिबिंब यहां, सद्गुणों और अच्छाई का।।
जन-जन के मन में हो प्रकाश, कुटियों में किरण फुट पड़े।
अज्ञान तिमिर की राहों पर, दीपों की टोली निकल पड़े।।
ऐसा जिस दिन हो जाएगा, यह जग जगमग हो जायेगा।
है कठिन, मगर होगा जरूर, वह दिन निश्चय ही आएगा।

पर्यावरण री पुतरी

जोधाणा में जरूरत पड़ी गढ़ के नींव लगाय।
अभयसिंह हुकम दियो, गिरधर आयो घाय।
1787 भादवा सुदी 10 मंगलवार।
बिश्नोई रै गांव पर करी चढ़ाई जार।
घोड़े पर घूम रह्यो पापी गिरधरदास।
कुल्हाड़ी रो खटको सुण्यो आई इमरता पास।
पापी गिरधरदास ने किया तलवार से वार।
तीनों छोटी गीगलिया दौड़ी मां रे लार।
खेजड़ली रो रूंखड़ो अर जांभोजी री आण।
चिपगी इमरता खेजड़ी रे चली कुल्हाड़ी रे तो निकळ गया प्राण।
इमरता चिपकी खेजड़ी चली कुल्हाड़ी धार।
चीख सुणी जद जोरगी आई रतनी लार।
भग्गु भागी जोर से आसी आई दौड़।
पिण्ड धड़ सब धरती पड्या आया रामोजी खौड़।
रामोजी रशीदा गया हुणगांव बिरमी नेतड़ा।
मां बैट्या री लाश पड़ी खेजड़ली रै खेतड़ा।
बिश्नोई भेळा हुआ ग्यारह और चाळीस।
लांबा सूं भोजोजी जाणी औपोजी चाल्या है फींच।
कलां सू खेजड़ी गांव में चली खून री धार।
363 स्वर्गे गिया कोई आयो न अन्त न पार।
पापी रा पग पाटग्या कर छूटी तलवार।
भंडारी धरा पड्यों नरक गयो दरबार।
अभयसिंह आंसू झरै, कर में लियां सूत।
माफी मांगे बिश्नोइयां सूं रजपूता रो पूत।
इक्कावन गांव भेळा हुआ जाळ नाडी अगार।
नागे पगा अभयसिंह खड़यो बिश्नोइयां रे द्वार।
बिश्नोई या माफी दई शर्त लिखाई पांच।
वृक्ष, हिरण, जीव जन्तु पर कभी न आवे आंच।
खेजड़ली रै खेत में गियो अभयसिंह दौड़।
शहीदा रो ढेर देखकर राजा मुंह लिनो है मौड़।
जांभोजी थै बंचालयां म्हारी नहीं नरका में ठौड़।
नरक म्हाने जाणो पड़सी यम कूटसी भौड।
संसार सुण साको हुयो हुई इमरता जीव।
माफी म्हाने देय दो म्हे घणी पाळस्यां प्रीत।
भूल्या भटक्या भारत रा भगत जांभोजी रा गुण गायसी।

❑ **भंवर लाल जाणी**
गांव- घट्टा, नोखा,
जिला बीकानेर (राज.)
मो. 9610866342

समाज में महिलाओं की प्रस्थिति

किसी भी जीवन का स्वरूप उसके दो स्तम्भ नर और मादा पर निर्भर करता है। जीव से ही समाज की परिकल्पना होती है, फिर वह चाहे मनुष्य हो या अन्य जीव। जीव की श्रेणी में मानव सबसे श्रेष्ठ तथा सभ्य प्राणी के रूप में धरती पर विचरण कर रहा है। मनुष्य ने आदि काल से लेकर आज तक विकास का जो रास्ता तय किया है, वह बहुत ही सराहनीय और श्रेष्ठतम ऐतिहासिक तथ्य है। सभ्यता के विकास में मनुष्य अलग-अलग राष्ट्रों, धर्मो, जातियों और समुदायों में एक लम्बे समय से बंटा हुआ है। विकास की यात्रा के साथ-साथ मनुष्य जाति ने कुछ ऐसे अमानवीय कृत्यों को भी जन्म दिया है, जिससे मानव को सभ्य समाज की कसौटी पर पूर्ण रूप से परिपक्व नहीं कहा जा सकता। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो पाऐंगें कि मुनष्य ने अपनी जीवन-यात्रा में जितने युद्ध, लड़ाइयॉ और साप्रदायिक हिंसा पैदा की है, उतनी तो कभी जानवरों द्वारा भी नहीं की गई। दुनिया के सभी देशों की धर्म, जाति और आर्थिक आधार पर बहुत सी समस्याएँ आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। हमारा देश भारत, जो कि दक्षिणी एशिया का एक विकासशील राष्ट्र है, वह आज आजादी के 65 वर्ष बाद भी, अनेक प्रकार की नई व पुरानी समस्याओं से जूझ रहा है। पिछले दो दशक से हम एक ऐसी समस्या से लड़ रहे हैं, जिसके प्रतिकूल प्रभाव समाज पर अब दिखने लगे हैं।

कन्याभ्रूण हत्या अर्थात् जन्म से पूर्व लड़कियों को गर्भ में ही मार देना वह गम्भीर समस्या है, जिसने आज भारतीय समाज के परिवेश को पूर्ण रूप से असंतुलित कर दिया है। यह समस्या भारत के हर धर्म, जाति और सम्प्रदाय में, विशेषत: उत्तरी भारत के राज्यों में आज भी फैली हुई है। आज देश में प्रति एक हजार पुरुषों पर 700 या 800 के आस-पास है, वहां समाज का ढांचा अस्थिर हो रहा है। इस संबंध में अगर किसी एक क्षेत्र या राज्य की बात की जाए जैसे हरियाणा राज्य तो हम पाऐगें कि सन् 2011 की (अन्तरिम) जनसंख्या के आधार पर हरियाणा में 1000 पुरुषों के पीछे 877 महिलाएँ है। हरियाणा की कुल जनसंख्या 2,53,53,081 है, इसमें से 1,35,00,000 के करीब पुरुष हैं, जबकि 1,18,47,000 के करीब महिलाएँ है। वैसे तो यह आंकड़े कोई ज्यादा अन्तर नहीं दर्शाते, परन्तु इन्हीं आंकड़ों को हम लाखों या करोड़ों में बदलकर देखें तो महिलाओं की संख्या पुरुषों से बहुत कम नजर आएगी जो कि एक कटु सत्य है। इन दोनों का अन्तर 16,53,000 है जो कि बहुत बड़ा अन्तर है। इसके दुष्परिणाम प्रथम स्वरूप में कुछ इस प्रकार से मिल रहे हैं कि आज कुंआरे लड़कों की, जिनकी उम्र 30-40 वर्ष के बीच है, एक बड़ी फौज बिना शादी के खड़ी है। जहां यह स्थिति है वहां पर लड़के या उनके मां-बाप इस स्थिति को लेकर तनावपूर्ण जीवन जी रहे हैं। जिन्हें शादी के लिए लड़कियां नहीं मिल रही है, वे परिवार बिहार, बंगाल और पूर्वी राज्यों से शादी के लिए लड़कियां ला रहे हैं।

2001 की जनगणना के मुकाबले 2011 में लिंग अनुपात में सुधार हुआ है, लेकिन यह विकट स्थिति अभी भी पूर्णतया: नहीं बदली है क्योंकि भारतीय समाज में आज भी लड़कियों का पैदा होना एक बोझ माना जाता। आज जहां एक ओर देश में साक्षरता बढ़ी है तथा लोगों की सोच में एक वैज्ञानिक बदलाव आया है, लेकिन फिर भी हमारी मानसिक सोच रुढीवादी, मध्यकालीन विचारधाराओं से निकलकर बाहर नहीं आ पा रही। जिसके फलस्वरूप समाज में एक लम्बे समय से लड़कियों की दशा शोचनीय बनी हुई है। वास्तव में हमारी इस मानसिकता के पीछे कि लड़कियां पैदा ही ना हो, एक लम्बा इतिहास रहा है। ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण करें तो हम पाऐगें कि मध्यकाल से ही स्त्री जाति को पुरुष समाज के द्वारा बनाए हुए रुढ़ीवादी विचारों का सामना करना पड़ रहा है। उसे समाज में, अपने घर में तथा हर जगह हिंसा का शिकार होना पड़ता है, दूसरा कारण यह है कि जब लड़कियों की शादी की जाती है, तब दहेज के रूप में उसे जो दिया जाता है, वह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था बन गई है, जिससे उसके जीवन को बहुत ही कष्टदायक बना दिया है। यह एक विडम्बना ही है कि उनकी कमी के बावजूद, हम इस प्रथा से चाहकर भी छुटकारा नहीं पा सके हैं। दहेज रूपी दानव समाज में पिछले चार दशकों से बहुत ज्यादा विकराल रूप धारण कर चुका है। यही परिस्थितियां हैं, जिनके कारण वश समाज में लड़कियों को जन्म से पूर्व ही समाप्त करने की प्रथा ने जन्म लिया। यह कैसी विचित्र स्थिति है कि भारत में जहां लड़कियों का लिंग अनुपात

लड़कों के मुकाबले काफी कम है वहां उपर्युक्त व्यक्त की गई दो परिस्थितियां समाज से मिटने का नाम नहीं ले रही है। लड़कियों के प्रति यह मनोस्थिति आज भारतीय समाज के अलग-अलग सम्प्रदायों, समूहों और जातियों में कहीं न कही विद्यमान है। उपर्युक्त संदर्भ में अगर हम बिश्नोई सम्प्रदाय की बात करें तो यहां भी स्थिति काफी गंभीर है। सम्प्रदाय के लिए यह स्थिति और भी विकट है, क्योंकि हमारा दायरा अन्य के मुकाबले बहुत छोटा है। देश की स्थिति के अनुरूप हमारे यहां भी, कन्याभ्रूण हत्या बड़े पैमाने पर हुई है। इसके पीछे मुख्य कारण वही है, जो उपर्युक्त बतलाए गए हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम भी उसी भारतीय समाज का हिस्सा हैं, जहां लड़कियों के प्रति यह सब घटित हो रहा है।

लड़कियों से अपने आप को मुक्त कराने की हमारी कुण्ठित विचारधारा, सम्प्रदाय को एक हाशिए पर धकेल रही है। हम यह नहीं जानते या जानना नहीं चाहते कि यह हालात समाज को ऐसे मोड़ पर खड़ा कर देगें, जिसका हमारे पास कोई अन्य विकल्प नहीं होगा। आम तौर पर यह माना जाता है कि पढ़ा लिखा आदमी समझदार होता है, परन्तु आज जितने भी मामले कन्या भ्रूण हत्या के सामने आ रहे हैं, उसमें 90 प्रतिशत शिक्षित हो पाऐगें जब ऐसी सामाजिक समस्याओं से अपने आपको मुक्त कर लेगें। हर विकास के हमेशा से दो पहलू होते हैं, विकास या विनाश और सम्भवत: ऐसा ही हो रहा है। आज जहां मेडिकल क्षेत्र में मानव जाति ने बहुत उन्नति की है, वहीं इसके दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। देश या समाज में आज लड़कियों की कमी है, उसका एक मुख्य कारण मैडिकल साईस का वह तरीका है, जिसके द्वारा हम गर्भ में ही जन्म से पूर्व ही बच्चे के लिंग को जान लेते हैं। मैडिकल सांईस की इस विधि को हमने लड़कियों के जन्म को रोकने के एक हथियार के तौर पर प्रयोग करना शुरु किया है, उसके घातक परिणाम आज हमारे सामने हैं।

अत: हम कह सकते हैं कि हमारी सोच के साथ-साथ हमारे द्वारा बनाए गए मैडिकल उपकरण भी इसके लिए जिम्मेवार हैं। लिंग अनुपात की बिश्नोई सम्प्रदाय में आज कमोबेश वही स्थिति है, जो कि उत्तर भारत के कई राज्यों में है, अधिकारिक तौर पर तो कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन यह माना जा सकता है कि एक हजार पुरुषो के अनुपात में महिलाओं की सख्यां कहीं पर आठ सौ तो कहीं पर इससे कुछ ज्यादा है दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि 1000 पुरुषों के पीछे महिलाओं की संख्या 800 के आस पास है । अगर इसकी गणना लाखों में करें तो, यह संख्या काफी बड़ी होगी। इस स्थिति के दूरगामी परिणाम अब हमारे सामने आने शुरू हो चुके हैं। आज समाज में हजारों ऐसे युवक हैं जो बिना शादी के बैठे हैं। ऐसे परिवार, लड़के जिन्हें शादी के लिए लड़कियां नहीं मिल रही है, वे मध्य व सदूर पूर्व भारत से लड़कियां ला रहे हैं। ऐसी लड़कियां जो उन क्षेत्रों से ब्याह कर लाई जाती हैं, वे हमारे सामाजिक परिवेश में ठीक प्रकार से ढल नहीं पाती। उनकी भाषा, संस्कृति एवं रीति-रिवाज़ भिन्न होने से हम उनसे पूर्ण न्याय तो कर ही नहीं पाते हैं, अपितु ऐसे रिश्तों में एक दूसरे के विश्वास की कसौटी पर खरा उतर पाना भी बहुत ही मुश्किल हो जाता है। हमारी सरकार ने कन्या भ्रूण हत्या को अपराध मानते हुए आज से कुछ साल पहले इसे कानूनी दायरे के अन्तर्गत प्रतिबन्धित कर दिया है। इससे यह समस्या काफी हद तक सीमित हो गई। कानून बनाने से किसी भी समाज में अपराधिक प्रवृति कम तो हो सकती है, परन्तु इसे पूर्णतया: समाप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए जरूरी है कि समाज का हर वर्ग लड़कियों के प्रति अपनी सोच को बदले तथा उसे सकारात्मक दृष्टिकोण से आगे बढाएं। इस क्षेत्र में हरियाणा राज्य के कुछ क्षेत्र, जिसमें जीन्द जिले के बीबीपुर गांव का नाम उल्लेखनीय है कि महिलाओं ने कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए जो आन्दोलन शुरु किया है, वह एक सराहनीय एवं साहसिक कदम है। इस गांव की महिलाओं ने कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध एक रचनात्मक पहल की है, वह दूसरों के लिए एक प्रेरणा का काम कर सकती है। आज हमें भी ऐसी ही, जन जागृति के लिए समाज में महिलाओं को इस कुरीति को दूर करने के लिए आगे लाना होगा। इस संबंध में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा तथा अन्य बिश्नोई सभाओं को भी इस मामले को गम्भीरता से यह तय करना होगा कि इसे रोकने के लिए कौन-कौन से दूरगामी ठोस कदम उठाए जा सकते हैं और इसके साथ-साथ महिलाओं की इसमें अधिक से अधिक भागीदारी कैसे सुनिश्चत की जाए यह भी तय करना होगा। अगर हम ऐसा कर पाए तो, जिस प्रकार बिश्नोई सम्प्रदाय पर्यावरण बचाव के लिए विश्व विख्यात है, वैसे ही बिश्नोई समाज कन्या-भ्रूण बचाव के प्रयासों का भी पर्याय बन जाएगा।

❑ रामकिशन बिश्नोई

संयुक्त सम्पादक, गजेटियरज कार्यालय अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं वित्तायुक्त, राजस्व एवं आपदा प्रबन्धन विभाग, हरियाणा।

पर्यावरण का दर्द

ईश्वर ने जगत की संरचना में प्रकृति को मानव के रूप में एक अनमोल उपहार दिया है। उसे मन और मति कि एक धरोहर के रूप में प्रकृति को सँवारने का एक अहम कर्त्तव्य सौंपा हैं। प्रकृति का श्रृंगार नष्ट करने की अनुमति ईश्वर ने हमें नहीं दी।

आज पर्यावरण को लेकर सारे वैज्ञानिक एवं धर्मशास्त्री खेद जता रहे हैं। उस पर्यावरण के संबंध में बिश्नोई धर्म के प्रणेता भगवान जम्भेश्वर जी ने विक्रम सम्वत् 1542 ई. (सन् 1485) में बिश्नोई पंथ के निर्माण पर समाज को यह चेतावनी देते हुए उन्नतीस नियम में इस नियम को भी शामिल किया था कि हरा वृक्ष ना काटे। इसी आज्ञा को मानते हुए विक्रम सं. 1787 ई. सन् 1730 में जोधपुर के पास खेजड़ली गांव में राजा अभयसिंह जी द्वारा खेजड़ी वृक्ष कटवाने पर 363 स्त्री पुरुषों ने अपना बलिदान दे दिया था, उस समय बिश्नोई महिला अमृता देवी ने नारा दिया था, कि-

'सिर साटे रूंख रहे, तो भी सस्तो जाण।'

(वनस्पति जगत की चैतन्य लीला)

'महदः येन प्राणन्ति विरूद्ध।' (अथर्ववेद)

अर्थात्- आत्म शक्ति के कारण वनस्पतियाँ साँस लेती है। **'चेतवित्मन अमात्योडितत्र औषधी सू अमर अग्नि।'**

अर्थ- औषधियों में आत्मा प्रकाशित होती है। ऋषि समाज ने इस पेड़ पौधों में देवीय चेतना को आदत बताया है।

'यो देवो औषधीयु यो वनस्पतिषु तस्मे देवाय नमो नमः।'

अर्थ- उस देव को नमन जो सकल औषधियों एवं वनस्पतियों में समाया है। आयुर्वेद में तो वृक्षों को अतुल्य सम्पदा से युक्त जीवनधारी सम्राट माना है। जैसे किसी माली की अनुमति से ही किसी बगिया के फूल तोड़ सकते है। वैसे ही पेड़ पौधों से भी प्रार्थना करें, सर्वप्रथम हाथ जोड़कर वनस्पति को सूचित करें कि हमें उसके किस अंग की किस कार्य के लिए आवश्यकता है क्योंकि पेड़ पौधे प्राकृतिक पदार्थो का सीधा स्त्रोत या दाता है। फूल पत्ती तोड़ते वक्त भी वनस्पति से क्षमा मांगें-कि हमारे कारण जो तुम्हें कष्ट पहुँचा है, उसके लिए हम क्षमा चाहते हैं।

इन जाग्रत ऋषियों का स्पष्ट मत था कि पेड़-पौधे चैतन्य जीव है।

1. श्रणवति पादपाः- पौधे सुनते है।

2.पश्यन्ति पादपाः- पौधे देखते है।

3. जिघ्रन्ति पादपाः-पौधे सूंघते है।

अतः 'संश भवन्येते सुखदः खसमनवता।'

अर्थात् वनस्पति की अंतः चेतना सुख का अनुभव करती है।

वैज्ञानिकों ने खोज की कि केनस द्वीप पर आकरकेले नाम का एक पौधा है, जो थोड़ा सा भी आहत होने पर बच्चे की तरह रोने लगता है। वेदों में आदर्श राष्ट्र का स्वरूप राष्ट्रीय प्रार्थना में निर्मित है। उनमें पर्यावरण संबंधित बात इस प्रकार है। (निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु पफलवत्यो न। औषधयः पच्यनतां योगक्षेमो न कलपताम्।।) (यजु. 22-22) हिन्दु धर्म शास्त्रों में वृक्ष लगाना पुण्य माना है और काटना पाप है। उसी प्रकार मन्या को देवी माना है और देवी को मारने के जो परिणाम कंस को भुगतने पड़े वो हम सबको मालूम है। वृक्ष को काटना और बेटी को मारना दोनों ही जघन्य अपराध है। मानव आज अहंकार में चूर है, वो वनों का विनाश कर प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। हवा और पानी में विषैली गैस झोंकी जा रही है, हर कार्य यंत्रीकरण हो गया है। सारा ऋतु चक्र अव्यवस्थित हो गया है। आज सम्पूर्ण समाज के अर्थशास्त्री इस पर्यावरण पर चिंतनशील है। वेद का आदेश है-

प्राणी जगत का विनाश मत करो, वनों से जो पेड़ स्वतःप्राप्त होते है, वे अब नहीं हो रहे हैं क्योंकि वृक्षों से गिरने वाले बीज जो कि पशुओ के खुरों से दबकर जमीन में अंकुरित होते वो स्थिति आज नहीं है। चूंकि चरनोई भूमि की कमी हो गयी है और पशु भी मांसाहारियों के पेट में चले गए है। इसलिए भगवान जम्भेश्वर के उपदेश का पालन करना मानव मात्र का कर्तव्य है।

भायां पेड़ा ने मत काटो रे, गजब को हुवेलो घाटो।
जान बूझ के मत फेंकों, भाई कीचड़ में भाटो।।

(प्रेम शास्त्री हाड़ोती कवि)

काबा-काशी है, जहाँ हरियाली और दूब।
पर्यावरण सुधारों जनहित में कुछ कार्य करो।।

(भगवतसिंह)

पर्यावरण सुधारों जनहित में कुछ कार्य करो।
दो-दो पेड़ लगाओं भाई, पुरखों का कुछ नाम करो।।

(प्रचार मंत्री राजेन्द्र आर्य)

हरि की आली हरियाली है, हरि रमते हरियाली में।

(वीरेन्द्र विद्यार्थी)

पनघट-पनघट प्यास पुकारे, परिहारिन के घट है रीते।
निर्ममता से भू जल दोहन, पर जल रक्षण का पारा।।
कितना नीचे और गिरेगा, मनु की आँखों का तारा।।

(रमेशचंद्र गुप्त)

आज इस पर्यावरण को लेकर विश्व के सारे वैज्ञानिक चिंतित है। वृक्ष वनस्पति और मनुष्य का जीवन परस्पर एक दूसरे पर निर्भर है।

1) एक वृक्ष अपने 50 साल के जीवन में पन्द्रह लाख की आक्सीजन देता है।
2) वायु प्रदूषण नियंत्रण एवं भूमि की उत्पादक वृद्धि इक्कतीस लाख की देता है।
3) भूमि क्षरण नियंत्रण पन्द्रह लाख साठ हजार की देता है।
4) जल संरक्षण अठारह लाख अस्सी हजार की देता है।
5) पशु पक्षियों का आश्रय सोलह लाख साठ हजार की देता है।
6) काष्ठ फल चारा चार लाख का देता है।

कुल योग एक करोड़ एक लाख होता है। इससे यह समझना चाहिए वृक्ष कितना कीमती और उपयोगी है।

वृक्ष प्रकृति के परिधान है, आध्यात्मिक प्रशिक्षक है। जल दाता और जीवन दाता है। मानव जाति के अनन्य सेवक है। प्राण दाता, आरोग्य दाता धनवंतरी है और कर्ण दधिची जैसे दान दाता भी है।

दस कूप (कुवे) के समान एक बापी (बावड़ी) और दस बावड़ी के समान एक सरोवर (तालाब) होता है तथा दस सरोवर के समान एक पुत्र होता है और दस पुत्र के समान एक वृक्ष का लगाना पुण्य दायक माना है। वृक्ष विषपान करने वाला शिव है, संसार के विष को पीकर कल्याणकारी प्राणवायु देता है। एक मनुष्य को अपने जीवनकाल में जितनी आक्सीजन एवं काष्ठ की आवश्यकता होती है तीन पेड़ उसकी पूर्ति करते हैं। पेड़ अपने जीवनकाल में करोड़ों की सम्पदा लुटाते हैं। हम सभी को अपने साँसों की मुक्ति हेतु तीन पेड़ अवश्य लगाना चाहिए।

वनस्पति वृक्ष मनुष्य के तुल्य होता है जो गुण-धर्म मनुष्य के हैं। वही वनस्पति और वृक्षों में होते हैं। मनुष्य के शरीर में रोम होते हैं वृक्ष में पत्ते होते है। मनुष्य के शरीर में त्वचा होती है। वृक्ष पर छाल होती है। जिस प्रकार मनुष्य की त्वचा पर चोट लगने से रक्त निकलता है, वृक्ष पर आघात लगने पर रस निकलता है। पुरुष के शरीर में मांस होता है, वृक्ष की अन्दर की त्वचा शक्कर के समान है मनुष्य के शरीर में स्नायु तंत्र होते है, वृक्ष के दृढ़ रेशे किनाट के समान है, मनुष्य के स्नायु तंत्र के अन्दर हड्डियाँ होती है। वृक्ष के किनाट के अन्दर काष्ठ होता है, मनुष्य के शरीर में मज्जा होती है, वृक्ष के अन्दर गूदा होता है। लगभग सारे गुण मानव में और वृक्ष में समान होते हैं।

(प्रमाण वृहदारण्यकोपनिषद् अ.3 ब्राह्मण 9 मंत्र 27 श्लोक पंक्ति 1 से 15)

अरण्या निरहन्य राचेन्ना भी गच्छति।
स्वादो फलस्य जग्धवाय यथाकाम निपद्यते।।
आजन्य गन्धि सुरभि वृहन्नाम कृषि वलाम प्राहं मृगानां।
मातर मरण्या निमशँ सिषम।।

ऋग्वेद 10-146-6

यह वन वीथी (वन्यजीव) अपनी ओर से किसी का संहार नहीं करते। मनुष्य ही पहले अपने अन्दर हिंसक भावना रखते हैं। यदि मनुष्य पूर्ण अहिंसक हो जाय, तो सिंह बाघ भी उसके आगे झुक जाते हैं।

जहां अंजन पुरुषों की गन्ध रहती है, जहाँ अन्य विविध सौरभ है, जहां बिना कृषि किये अन्न उत्पन्न होता है, जो फूलों की माता है उस वनवीथी को प्रणाम करना चाहिए और मनुष्य ने अपने जीवन में तीन वृक्ष अवश्य लगाने चाहिए।

❑ **श्रीराम बिश्नोई (सारन)**
जे.पी.कालोनी म. न. 66 , खातेगांव, जिला-देवास
(म.प्र.) पिन- 455336, मो.: 9926303855

घर आगे इत गोवलवासो

गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा, ''घर आगे इत गोवलवासो'' अर्थात् यह संसार हमारा गोवलवास है । हमारा असली घर तो आगे है । राजस्थान में पहले एक आम प्रथा थी जब किसी क्षेत्र में अनावृष्टि आदि के कारण अकाल जैसी परिस्थितियां पैदा हो जाती थी तो वहां के लोग अपना दैनिक आवश्यक सामान और पशु धन लेकर किसी हरे भरे जल युक्त स्थान पर जाकर रहने लगते थे । ऐसे अस्थाई निवास को गोवलवास कहा जाता था । बाद में अनुकूल परिस्थितियां आने पर ये लोग अपने घरों को लौट जाते थे। सभी जानते हैं कि इस संसार में कोई सदा नहीं रह सकता । मृत्यु ही इस जगत का सबसे बड़ा सत्य है । जन्म के साथ ही व्यक्ति की मृत्यु निश्चित हो जाती है। हम जन्मदिन मनाने के बाद एक एक दिन गिनते हुए मानो अपनी मृत्यु का इन्तजार करते हैं । इस प्रकार हम सब यहां परदेशी हैं । यहां सब कुछ बेगाना है । न हम किसी के कुछ हैं, न कोई हमारा अपना है। अपना यहां कोई नहीं, कुछ भी नहीं और जो थोड़ा बहुत अपना दिखाई भी देता है उसे भी मौत छीन ले जाती है । अत: मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि, अपने असली घर की खोज है । यहां अपना घर कभी कोई नहीं बना पाया । यहां घर बनते हैं उजड़ने के लिए । ठीक से घर बन भी नहीं पाते कि उजड़ने लगते हैं । जब हम ही यहां सदा नहीं टिक सकते तो हमारे बनाये घर यहां कैसे टिकेंगें । यहां घरों पर की गई सारी मेहनत व्यर्थ जाती है ।

आदमी की सारी खोज उस घर की खोज है जो सदा के लिए उसका अपना हो सके । उस घर की खोज जो घर हो सराय न हो यहां तो सब सरायें हैं । हम भी उसी कतार में हैं । इसीलिए कितना ही धन हो, कैसा ही पद हो, प्रतिष्ठा हो - तृप्ति नहीं मिलती । गरीब को तो फिर भी थोड़ी आशा रहती है कि आगे यह हो जायेगा, वह हो जायेगा तो शान्ति मिल जायेगी । किन्तु अमीर की तो यह आशा भी टूट जाती है क्योंकि सुख के सारे साधन उपलब्ध रहने पर भी चैन नहीं मिलता- धर्मशाला में कैसा सुख-चैन ? बैचेनी यहां स्वाभाविक है । संसार में धनियों से अधिक दुखी और कोई नहीं ।

सारे मरघट सारे कब्रिस्तान प्रत्यक्ष प्रमाण हैं इस बात का कि यह जगह घर नहीं है । इतने प्रमाणों के विपरीत कब तक धोखा दे सकता है अपने आप को । सब ओर यह सत्य स्पष्ट शब्दों में अंकित है कि हम सब बेघर हैं जैसे ही किसी को यह ख्याल स्पष्ट होता है, असली घर की खोज शुरू हो जाती है, ''**आशा सांस, निराशा भइलो, पाइलो मोक्ष द्वार खिणूं**''-गुरूवाणी ।

संसार की दूरी अनन्त है इसलिए किसी को नहीं मिलता चलते रहते है लोग- लगता है अब मिला-अब मिला, पर मिलता कभी किसी को नहीं तमन्नाएँ दम तोड देती है पर संसार नहीं मिलता । बस आभास भर होता है जैसे दूर कहीं जमीन को छूता आकाश । संसार बहुत दूर है मजा यह है कि सबको बहुत नजदीक लगता है और सार जो बहुत नजदीक है, बहुत दूर लगता है क्योंकि नजदीक की वस्तुएँ हमें दिखाई नहीं पडतीं इसलिए जो नजदीक से भी नजदीक है, हमें दिख नहीं पडता। धरती पर हम एक एक इन्च जमीन के लिए लड़ते है' क्योकि वह सीमित है किन्तु आकाश को भी अवकाश देने वाले साम्राज्य की सीमा अनन्त है अत: वहां को झगड़ा नहीं होता ।

प्रकृति का अटल सिद्धान्त है कि विराट से दोस्ती करेंगें तो विराट हो जाएगें और क्षुद्र से दोस्ती करेंगें तो क्षुद्र हो जाऐंगें। ब्रह्म विराट से भी विराट है अत: उससे दोस्ती करने वाला विराट हो जाता है । अक्सर हम क्षुद्र से दोस्ती करते है । किसी ने धन से दोस्ती कर ली, वह नोट ही गिनता रहता है । उसे सारे जगत का सौन्दर्य नोटों में ही दिखाई देता है । किसी ने पद से दोस्ती कर ली । वह दाव पर दाव लगाकर कुर्सी बड़ी करता रहता है और अंत में कुर्सी सहित गिर जाता है ।

हार्दिक आकांक्षा तो सबकी यही है कि विराट से दोस्ती हो जाये सब चाहते हैं कि उस पद को प्राप्त कर लें जो हमारी सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति कर सके और जिसे कोई छीन भी न सके । मानव जीवन की खोज का अन्तिम विश्लेषण इसी निज घर की खोज है, परमात्मा की खोज है । किन्तु वह मिलता तभी है जब जड़-चेतन सम्पूर्ण जगत से नाता टूट जाता है । वेद ने प्रश्नोत्तर शैली में प्रश्न किया, **''कस्मै देवाय हविषा विधेय''**- हम किस देव को अपना आत्म सर्मपण करें ताकि सदा के लिए सब प्रकार की चिंताओं से मुक्त हो जाऐं । उत्तर दिया, **''यस्य छाया अमृतं यस्य मृत्युः, कस्मै देवाय हविषा विधेय''** अर्थात् जिसकी छाया अमृत और उससे वंचित होना ही मृत्यु है उस परमानन्द स्वरूप प्रभू की शरण प्राप्त करें । **''घर आगे इत गोवल बासो । गोवल वास कमायले जिवडा सोइ स्वर्गापुर लहणा''** - श्री जम्भेश्वर वाणी ।

जो पहिरावे सोहि पहरूं, जो खिलाये सो खांऊ ।
जहां बिठावे तित ही बैठूं बेचे तो बिक जांऊ ।
मीरा के प्रभू गिरधर नागर, बार बार बलि जांऊ ।

❑ बलवीर सिंह
कृष्णापुरी, लाईनपार-मुरादाबाद (ऊ.प्र.)
फोन- 9837241173

11 नवम्बर, 2012 को होगा जांभाणी साहित्य अकादमी के भवन का शिलान्यास

जांभाणी साहित्य अकादमी के मुख्यालय, पुस्तकालय व शोध सस्ंथान हेतु प्रस्तावित भवन का शिलान्यास 11 नवम्बर, 2012 को प्रातः 10 बजे होगा। इस भवन हेतु डॉ. (श्रीमती) सरस्वती बिश्नोई ने बीकानेर की जयनारायण व्यास कॉलोनी में भूखण्ड अकादमी को दान में दिया है। हिसार के सासंद चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई समारोह के मुख्य अतिथि होंगे तथा बीकानेर के सांसद श्री अर्जुनराम मेघवाल समारोह की अध्यक्षता करेंगे। समारोह के विशिष्ठ अतिथिगण इस प्रकार हैं-

सुश्री सिद्धि कुमारी, विधायक, बीकानेर, श्री रामेश्वर डूडी, जिला प्रमुख, बीकानेर, महामहोपाध्याय डॉ. वेदप्रकाश शास्त्री, पूर्व कुलपति गु.कां.वि.वि. हरिद्वार,, श्री जसवंत सिंह बिश्नोई, , पूर्व सांसद (जोधपुर), श्रीमती विजयलक्ष्मी बिश्नोई, अध्यक्षा, समाज कल्याण बोर्ड व राज. महिला कांग्रेस, डॉ. बी. डी. कल्ला, पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार, श्री दुड़ाराम, पूर्व संसदीय सचिव, हरियाणा सरकार, श्री हीरालाल बिश्नोई, पूर्व विधायक (सांचौर), श्री एल. आर. बिश्नोई, पूर्व सलाहकार, मुख्यमंत्री राज., श्री बी. डी. अग्रवाल, प्रमुख उद्योगपति व समाजसेवी।

इस समारोह में स्वामी भागीरथदास जी आचार्य (जाजीवाल धोरा), स्वामी रामानन्द जी आचार्य (पीठाधीश्वर मुकाम), श्रीमहंत शिवदास जी शास्त्री (रूड़कली), स्वामी रामाकृष्णा जी (संभराथल धोरा), संत डॉ० गोवर्धनराम जी आचार्य, स्वामी राजेन्द्रानन्द जी (हरिद्वार) , स्वामी मनोहरदास जी (मेहराणा धोरा), स्वामी भागीरथदास जी शास्त्री (मुकाम) आदि संतगण का सान्निध्य भी प्राप्त होगा।

इस अवसर पर आप सभी सादर आमंत्रित है।

समारोह स्थल - सेक्टर-1, ई-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर

❑ डॉ. बनवारी लाल सहू
प्रवक्ता व उपाध्यक्ष
जांभाणी साहित्य अकादमी
94148-75029

कुछ विचारणीय विषय

गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरायः ।

गुरुसाक्षात् परं ब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश माना गया है अर्थात् गुरु का स्थान सर्वोपरि है और जैसा कि सर्वविदित है कि गुरु जम्भेश्वर महाराज एक अलौकिक महापुरूष थे। जिनके सम्यक् दर्शन, सम्यक् दृष्टि व सम्यक् ज्ञान ने एक ऐसे समाज का निर्माण किया जिसका उद्देश्य जीवों की रक्षा व यज्ञादि कर्मो को करते हुए विश्वकल्याण करना है। इस पंथ के लोगों के मुखमण्डल के तेज से ही पता चल जाता है कि अमुक व्यक्ति गुरु महाराज का अनुयायी और 29 नियमों का पालन करने वाला है। मगर यहां मैं आपकी दृष्टि कुछ बातों पर डलवाना चाहूंगा। गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतरण सन् 1451 ई. में हुआ था और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद का जन्म सन् 1824 ई. में। स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 ई. में की जबकि बिश्नोई पंथ की स्थापना गुरु महाराज ने सन् 1485ई. में की थी यानि जो बातें स्वामी जी ने सन् 1875 में बताई वे बातें गुरु महाराज सन् 1485 में बता चुके थे। फिर क्या कारण रहा कि आर्य समाज आज करीब -करीब हर देश में है और हमारे पंथ का दायरा सीमित। हम क्यों गुरु महाराज के मिशन को आगे बढ़ाने में उतनी ऊर्जा नहीं लगा सके जितनी की और पंथियों ने लगाई। जबकि हमारे 29 नियम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सर्वोत्तम हैं।

दूसरी बात अगर आज देश के किसी भी कोने में पर्यावरण व वन संरक्षण पर यदि कोई संगोष्ठी होती है तो पर्यावरण में योगदान के लिये एक मात्र सुन्दरलाल बहुगुणा का नाम आता है मगर क्या कहीं अमृता देवी बिश्नोई का नाम भी किसी पर्यावरणीय संगोष्ठी में आता है। सन् 1730 ई का यह बलिदान वृक्षों को बचाने के लिए विश्व का सबसे बड़ा बलिदान था जिसमें 363 महिला-पुरूष व बच्चों ने वृक्ष न कटने देने के लिए अपनी जान गवां दी मगर गुरु महाराज की वाणी '**सिर सांटे रुंख रहे तो भी सस्ता जाण**' का मान गिरने नहीं दिया। इतनी बड़ी बलिदानी घटना की नायिका तो वास्तव में भारत रत्न की हकदार है, मगर अफसोस बिश्नोइयों और राज्य राजस्थान के बाहर की कोई अमृता देवी को जानता हो जबकि पर्यावरण में योगदान के लिये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शहीद अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार शुरू होना चाहिए। आखिर क्या वजह है कि हम अपने पंथ के प्रचार प्रसार में इतने पीछे रह गये।

बड़े हर्ष का विषय है आज बिश्नोई समाज द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठियों का आयोजन हो रहा है और समाज के ज्वलंत मुद्दों को उठाया जा रहा है। मगर आज उतर प्रदेश के बिश्नोई समाज में मुख्य रूप से दो धाराएं प्रवाहित हो रही है जिन्हें अमूमन हम जाट बिश्नोई व वैश्य बिश्नोई के नाम से पुकारते हैं, जिनके बीच की खाई दिनो दिन गहरी होती जा रही है । सच्चाई तो यह है कि इन दोनों धाराओं के मतभेद इतने गहरे हैं कि एक धारा दूसरी धारा में शादी-ब्याह तक करने से परहेज करते हैं, आखिर क्यों ? हम क्यों आपस मे सामंजस्य नहीं बैठा पाते जबकि हमारे सारे नियम एक हैं, हम एक ही गुरुवर के शिष्य हैं। अब समय आ चुका है कि भविष्य में होने वाली संगोष्ठियों व महासभा की बैठकों में इन बिन्दुओं पर खुलकर चर्चा होनी चाहिए। हम एक सभ्य समाज का अंग हैं, कुछ ऐसा करें कि सारे विश्व को गुरु महाराज के दर्शन से अवगत करायें और समस्त विश्व को गुरु महाराज का अनुयायी बनाते हुए एक ऐसे स्वस्थ समाज का निर्माण करें कि जहां जीवों पर दया होती हो, पर्यावरण सुदृढ़ हो और प्रतिदिन यज्ञ की सुगन्ध से वातावरण सुगन्धित होता हो तब जाकर हम अपने ऊपर गर्व कर कह सकते हैं कि हम गुरु महाराज के सच्चे अनुयायी हैं।

❑ **रवित बिश्नोई**

उषा सदन, पहाडमऊ, जिला-मुरादाबाद

(उ.प्र.) मो. 09758833783

जीवन दर्शन

जीवन के खेल को भी, खेल रूपी आनन्द से भर लो

सबद 13 ओ३म् **''कायरे मूर्खा ते जन्म गंवायों भूंथ भारी ले भारूं''** अर्थात् अरे मूर्ख तूने अमूल्य मनुष्य जन्म को पाकर व्यर्थ ही खो दिया, भार रूप होकर तूने पृथ्वी को भार ही मारा। **''येषां न विद्या न तपो न दान न चापि शील गुणों न धर्मः। ते मृत्युलोके भुवि भार भूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति। ''** अर्थात् जिनमें विद्या, तप, दान, ज्ञान, शील, गुण व धर्म नहीं है वे मृत्युलोक में पृथ्वी पर भार है और साक्षात् मनुष्य के रूप में मृग विचरते हैं। मानव जीव अति मूल्यवान है, इसकी कीमत धन दौलत से नहीं आंकी जा सकती। मनुष्य के श्रेष्ठतम मन व बुद्धि है व सुंदर संस्कार भी है। जीवन एक अनूपम खेल भी है इस जीवन रूपी खेल का आनन्द भी खेल की तरह ले। आज चारों तरफ दृष्टि डालेंगे तो पाएंगे धनवान भी परेशान, बड़े पद व बड़े पोजीशन वाले भी परेशान, बुद्धिवान भी परेशान नजर आते हैं, सुख व आनन्द कोसों दूर चले गए हैं। जीवन आनन्दित क्यों नहीं रहा ? उत्तर-निम्न कारणों ने मनुष्य का आनन्द छीन लिया है।

बढ़ती इच्छाएं-साधनों की कमी नहीं, धन की कमी नहीं, परन्तु इच्छाएं कम नहीं हो रही, लगातार बढ रही है, इन बढ़ती इच्छाओं ने असंतोष बढाया है, खालीपन बढाया है। दूसरों के तुलनात्मक इच्छाओं को बढ़ाने वाले कभी तृप्त व संतुष्ट नहीं हो सकते। इच्छाएं व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों को नष्ट करती है। इच्छाओं को कम करना सीखे। इच्छाओं की गुलामी अच्छी नहीं। संसार में वही मनुष्य आनन्दित रह सकता है जिसको कुछ भी नहीं चाहिए। जो चाहिए शब्द को समाप्त कर देगा वही प्रसन्न रह सकेगा।

सकारात्मक सोच की कमी-आज ज्यादातर मनुष्य हर बात को नकारात्मक दृष्टि से देखते हैं। सब कुछ ठीक ठाक हो उसमें भी नकारात्मकता यानि कमी ढूंढते है व परेशान होते हैं। जैसे हर बात में ऐसा न होता तो अच्छा होता। क्यों, क्या, कैसे ही ढूंढते रहते हैं। हर पहलू में सकारात्मक व नकारात्मक दो पहलू है। सामने वाले के नजरिए पर निर्भर करता है जैसे-शीशे का गिलास पानी से आधा भरा है नकारात्मक स्वभाव वाले से पूछो तो कहेगा, गिलास आधा खाली है और सकारात्मक वाला कहेगा, गिलास आधा भरा है। जीवन में सकारात्मक सोच अपनाने की कोशिश करें और जीवन का आनन्द ले। नकारात्मक से मस्तिष्क में नकारात्मक उर्जा बनती है जो स्वयं को ही नुकसान करती है।

अच्छे व्यवहार की कमी-यदि हम अपने परिवार में व कर्म क्षेत्र पर साथियों से स्नेह व सम्मान से रहे तो जीवन में आनन्द भर सकता है। यदि हम स्नेह व सम्मान से रहेंगे तो एक दूसरे के अवगुण नहीं देखेंगे, एक दूसरे पर कटाक्ष नहीं करेंगे। इन सबसे ही जीवन में आनन्द बढेगा। आपसी सद्व्यवहार से ही जीवन में खुशी व आनन्द आएगा।

श्रेष्ठ विचारों की कमी-मन में तीन प्रकार के विचार चलते हैं-सकारात्मक, नकारात्मक व व्यर्थ विचार। हैरानी की बात है कि मनुष्य के मन में 95 प्रतिशत नकारात्मक व व्यर्थ विचार चलते है और सकारात्मक व श्रेष्ठ विचार 5 प्रतिशत से भी कम चलते है, तो इससे अनुमान लगा सकते है कि विचार यदि पूरा दिन व्यर्थ व नकारात्मक चलेंगे तो कार्यप्रणाली भी उससे प्रभावित होगी। इस नकरात्मक व व्यर्थ को समाप्त करने के लिए सवेरे जल्दी प्रकृति का आनन्द ले, स्वयं से बातें करें व प्रभु से बातें करें। स्वयं के भाग्य की सराहना करें कि प्रभु ने कितना सुन्दर सुखमय जीवन दिया है, जो कर्म मैं करूंगा उसी से मेरा भाग्य बनेगा। क्यों न मैं श्रेष्ठ कर्म करुं जिससे मेरा वर्तमान व भविष्य दोनों ही सुधरे। परमात्मा ने मुझे सभी शक्तियां, वरदान दिए हैं। निराशा, उदासी व हीनभावना के विचारों को सदा के लिए विदाई दे दो। प्रभु की याद में रह सुन्दर व श्रेठ विचार धारण करें उसी से जीवन आनन्दित होगा।

❑ **श्रीमती चन्द्रकला बिश्नोई**

एसोसिएट प्रोफेसर

एफ.सी. कॉलेज, हिसार (हरि.)

बधाई संदेश

डॉ. सुनील बिश्नोई सुपुत्र श्री ओम प्रकाश राहड़ निवासी-6एच (पटरोरा) त. श्रीगंगानगर, का RPSC द्वारा 'Veterinary Officer' के पद पर 11वें रेंक पर चयन हुआ है

आकांक्षा बिश्नोई सुपुत्री डॉ. भरत सिंह बिश्नोई (Director, Health Services, Haryana) का मारूति उद्योग में सहायक मैनेजर (जी. ई.टी.) के पद पर नियुक्ति हुई हैं।

डॉ. हिना बिश्नोई सुपुत्री श्री शंकर लाल खिचड़, निवासी 4/इ, 85 जय नारायण व्यास कालोनी(बीकानेर) ने बी.डी. एस. (दन्त चिकित्सक) की डिग्री उच्च श्रेणी से पूरी की है।

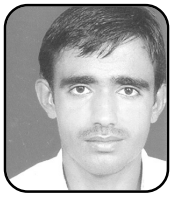

प्रेमप्रकाश खीचड़ सुपुत्र श्री गोपीराम निवासी ग्राम फूलासर तहसील कोलायत जिला बीकानेर राजस्थान का लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्राध्यापक भर्ती परीक्षा-2011 में विषय अंग्रेजी वरीयता क्रमांक 20 पर चयन हुआ हैं।

श्रीमती रेखा रानी धर्मपत्नी अशोक पूनियां भूमि मूल्यांकन अधिकारी (एल. वी.ओ.) गांव मंगाली ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) विधि (लॉ) विषय में उतीर्ण की है।

नरेन्द्र बिश्नोई पुत्र श्री शंकर लाल खिचड़ निवासी 4-E-85 पोस्ट जय नारायण व्यास कालोनी बीकानेर की महेन्द्रा एण्ड महेन्द्र कम्पनी में इंजिनियर के पद पर नियुक्ति हुई है।

पंकज बिश्नोई सुपुत्र श्री आत्मा राम भादू निवासी धांगड़, जिला फतेहाबाद, हरि. ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (NET) की परीक्षा Mangement विषय में उत्तीर्ण की है।

अशोक कुमार सुपुत्र दलीप मांझू (उत्तर-पश्चिम रेलवे बीकानेर) ने M.Sc. Business, System Integration (SAP Technology), Brunel Universtiy London (U.K) प्रवेश प्राप्त किया है।

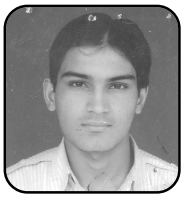

अनोख बिश्नोई सुपुत्र श्री सीताराम बिश्नोई (अध्यापक) सुपौत्र स्व. श्री लाधुराम सिहाग निवासी भोपाल पुरा त. सूरतगढ श्री गंगानगर का GOVT MEDICAL COLLEGE AMRITSAR (PUNJAB) में M. B..B.S में चयन हुआ है।

अजय बिश्नोई सुपुत्र श्री प्रेम सिंह ईशरवाल निवासी सारंगपुर, जिला हिसार ने दिल्ली विश्वविद्यालय में छात्र संघ के चुनाव में उप प्रधान के पद पर शानदार विजय प्राप्त की है।

अरविन्द गोदारा सुपुत्र स्व. श्री सुभाष गोदारा निवासी तायल बाग, हिसार, (टी.आई.टी, भिवानी से टैक्सटाईल्स इंजिनियरिंग के फाईनल ईयर के विद्यार्थी) को संस्थान की प्रतिष्ठित मैगजीन कीर्ति का एडिटर-इन-चीफ नियुक्त किया गया।

आप सभी को उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

गौ भक्ति

गौ अर्थात् गाय जो हमारी हिन्दू संस्कृति के पाँच मान बिन्दुओं में से एक है। गाय को समस्त हिन्दू माता के रूप में पूजते है। भगवान गुरु जाम्भो जी ने गाय को पूजनीय बताया है। पृथ्वी लोक पर मानव गाय को पालते हैं क्योंकि गाय सभी पशुओं में सीधा व सज्जन पशु है। जाम्भो जी ने कहा है कि यदि तुम्हें पशु पालन करना है तो गौ पालन करो, गाय का दूध अमृत के समान लाभकारी है। इसका सेवन करने से मन व बुद्धि सात्विक बनती है। लेकिन आज के युग में गायों को अत्यन्त कष्ट पहुँचाया जाता है, उन्हें काटा जाता है, गाये पीड़ा से दर्द से कराह रही होती है, लेकिन मनुष्य उसके दर्द को ना समझ के अपने व्यापार का आनन्द लेता रहता है गुरु जाम्भो जी कहते है-

काहे काजै गऊ विणासै, तो करीम गऊ क्यूं चारी

भगवान श्री कृष्ण ने गऊवें चराई थी यदि गऊवों को मारना ही इष्ट होता तो वे पुरुष कभी भी गऊवे नही चराते अब तक तो यहां संसार मे एक भी गऊ जीवित नहीं होती तो फिर तुम लोग क्यों गऊवो का विनाश करते हो। कितना उपयोग है गऊ माता का वो हमें दूध, दही घी आदि प्रदान करती है। सबद सख्या 9 में जाम्भो जी ने कहा है। कि

कांही लीयो दूधूं दहियूं, काही लीयूं घीयूं महीयू
कांही लीयूं हाडू मांसूं, काही लीयूं रक्त रूहियूं।

अर्थात् यदि तुम लोग गऊवो का विनाश करना ठीक मानते हो तो फिर उनका अमृतमय दूध, दही, घी, मेवा आदि क्यों ग्रहण करते हो, इन वस्तुओ से सदा परहेज रखो और यदि घी, दूध, आदि ग्रहण करते हो तो फिर उनके हाड़, मांस, रक्त और जीव को क्यों खा जाते हो। यह तुम्हारा अधिकार नही हो सकता। जब गऊवे चराते समय गुरु जाम्भो जी समराथल पर विराजमान थे, उसी समय ही ग्वाल-बालों ने आकर निवेदन किया कि हे देव! इस समय पशु धन पर बड़ी विपति आयी हुई है। जोधपुर राज्य के पशु धन ऊँट, गऊ आदि को डाकू लोग हरण करके जबरदस्ती यहीं सम्मराथल के नीचे से होते हुये ले जा रहे है। इन बेचारी गऊवे के बछड़ें पीछे छूट गये है। तब जाम्भो जी के आदेशानुसार गउओं को मुक्त कराया गया। शास्त्र कहते है कि गाय के अन्दर 33 करोड़ देवी-देवता निवास करते है इसलिये गाय की सेवा मात्र से ही मानव जीवन में तर जाता है राजा दिलीप ने तो गाय की रक्षा के लिये अपना शरीर तक दाँव पर लगा दिया था। छत्रपति शिवाजी ने गौ भक्ति के कारण ही गौ वध हेतु ले जाने वाले कसाई को कड़ा दण्ड दिया था ताकि वह जीवन भर ऐसा जघन्य अपराध करने की हिम्मत न कर सके। गौ भक्ति के कारण श्री कृष्ण गायों को चराने के लिये यमुना किनारे ले जाते थे तथा वहाँ अपनी मधुर बंशी बजाते थे, गाय आर्थिक आधार का मेरुदण्ड है तथा सम्पत्ति का भण्डार है हमारे सभी ऋषियों, मुनियों, सन्तो, महात्माओं ने गाय की महिमा का वर्णन किया है। हमारे संस्कार यज्ञ एवं अनुष्ठान गाय के बिना सम्पन्न नहीं होते। हमारे अंदर जो अंधकार भरा होता है, अज्ञानता होती है। उसे गाय ही दूर करती है और बाहरी जो अंधकार होता है। उसे भी गाय दूर करती है। बाहरी अंधकार अर्थात् अंधकार को दीपक जलाकर दूर किया जाता है। दीपक को जो तत्व जलाता है वह घी जो गाय की ही देन है और उसका अमृतमय दूध अंदर के अंज्ञान को दूर करता है। गाय को मारना, डॉट कर चरती हुयी गाय को भगाना हत्या करना सबसे बड़ा पाप माना गया है। कहते हैं कि एक बार जब जनकपुरी के राजा जनक अपने राज्य के भ्रमण के लिये जा रहे थे तो उनके रथ के आगे-आगे सैनिक चल रहे थे, जो रास्त को साफ करते जा रहे थे कि कोई आदमी तथा जानवर पशु रास्ते मे ना आये, उस समय एक गाय रास्ते मे चर रही थी तब सैनिको ने अपने भाले से गाय को मारकर रास्ते से हटा दिया था जिस कारण वश राजा जनक को नरक का दुख: भोगना पड़ा इसलिये गाय को नही मारना चाहिये। आज गाय रोती है पीड़ा सहति है। कहती है कि हे प्रभू! मेरे गोविन्द आज तुम नहीं हो तो हमारी दुर्दशा हो गयी हम पर अत्याचार होता है मेरे प्रभू हमें आकर बचा लो हमें आकर बचा लो। यदि इस प्रकार से गौ वध होता रहा तो एक दिन सम्पूर्ण भारतवर्ष मरघट बन जायेगा। अत: गाय जो हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है उसकी रक्षा के लिये आगे आये तथा गौ वध बन्द करायें तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा करें।

❑ आँचल बिश्नोई,
रसूलपुर गुर्जर त.काठ, जि.मुरादाबाद (ऊ.प्र.)

धार्मिक सहिष्णुता के प्रतीक: जम्भेश्वर जी

वर्तमान परिवेश में विश्व सम्प्रदायिकतावाद की अग्नि में जल रहा है। इन्सानियत पर जातीयता हावी होती जा रही है। सामाजिक एकता धर्मान्ध लोगों द्वारा विखण्डित हो रही है इससे मनुष्य ही मनुष्य का शत्रु बनता जा रहा है।

आज इन सबके परिणामस्वरूप खालिस्तान, बोडोलैण्ड, गोरखा लैण्ड, तेलंगाना इत्यादि प्रदेश पृथक् राज्य की मांग कर रहे हैं। हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई इन धर्मों के भी आगे उपधर्म बनते जा रहे हैं। मुस्लिम सम्प्रदाय शिया और सुन्नी दो वर्गो में बंटा हुआ है और पाकिस्तान अफगानिस्तान इत्यादि देशों में आए दिन खून-खराबा हो रहा है। अजमेर मस्जिद में बम ब्लास्ट, गोधरा काण्ड, उड़ीसा में आश्रम पर ईसाई सम्प्रदाय के लोगों का हमला तथा हाल ही में अमेरिका में स्थित गुरूद्वारे का रक्तपात इस बात का प्रमाण है कि धर्मांधंता आज वैज्ञानिक युग में भी हम पर हावी है। परन्तु हम इन सभी घटनाओं का विवेचन करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि इन सभी घटनाओं के पीछे कुछेक कटट्र लोगों का हाथ हैं जो धर्म का आधा-अधूरा ज्ञान रखते है या फिर निजी राजनीतिक स्वार्थो की पूर्ति के लिए ऐसे कार्यो को अंजाम देते हैं। वेद-कुरान-बाइबिल-गुरूग्रन्थ साहिब इत्यादि धार्मिक ग्रन्थों में मानवीय मूल्यों को ही स्थापित किया गया है। इन ग्रन्थों में हिंसा का तो कोई स्थान नहीं है। महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, कबीर, रहीम, तुलसीदास इत्यादि महापुरूषों ने धार्मिक एकता का ही सन्देश दिया है।

15वीं शताब्दी में जम्भेश्वर महाराज ने एक मुस्लमान मुल्ला काजी को जो प्रवचन दिया वह बड़ा ही प्रासंगिक है। एक बार मुल्ला काजी जम्भदेव जी के पास आए और कहा शरह तोरे नामक पुस्तक में जो कुछ भी लिखा है वही सत्य है इसके अतिरिक्त जो कुछ भी कहा जाता है वह सब झूठ है इसके उतर स्वरूप गुरु महाराज ने यह शब्द सुनाया-

ओ३म् जके पंथ का भाजणां, गुरू का नीदणां, स्वामी कहा दुस्मणा।

कुफर ते काफरा, कुमली कुपातूं, कुचीला कु धातूं। सबद 112

भावार्थ- हे मुल्ला! यदि तुम अपनी पुस्तक को ही सर्वश्रेष्ठ बताते हो तो यह तुम्हारी भूल ही होगी इसका मतलब तो यह होता है कि अन्य सभी मत मतान्तर झूठे है तथा आप लोग भी जैसी तुम लोगों को आज्ञा दी है वैसा आचरण नहीं कर रहे हो। इस प्रकार जो पन्थ को तोड़ता है, सतगुरू की बताई मर्यादा का उल्लंघन करता है तथा सभी के स्वामी परमात्मा से दुश्मनी मोल लेता है वह काफिर है। तुम लोग इसी मार्ग का ही अनुसरण कर रहे हो तथा तुम नरक के पात्र हो इतना सुनकर मुल्ला सधारी ने कहा

मुला सधारी यूं कहै, महमंद ही फुरमान।
रोजे रखे निवाज पढे, बंदगी करै साहिब तेहि मान।।

अर्थात् हम लोग महमंद का फरमान स्वीकार करते हैं। रोजे रखते हैं, तीन समय नमाज पढते है हमारी बंदगी साहब जरूर स्वीकार करेगा हम लोग नरक में कैसे गिर सकते हैं? तो इतना सुनकर जम्भदेवजी ने निम्न शब्द सुनाया

''ओ३म् ईमा मोमण चीमा गोयम, महमद फुरमानी।'' सबद 113

भावार्थ- जैसा पीर मुहमंद ने फरमाया है वैसा तुम लोग नहीं करते हो उनका कहना था कि सच्चा मानव तो वही हो सकता है जो ईमानदारी से हृदय गुफा में स्थित परमेश्वर की खोज कर वह ईश्वर तो घट-घट में व्याप्त है । उसके लिए तुम्हें मस्जिद में जाकर हल्ला मचाने की जरूरत नहीं है। तुम शान्त चित से ईश्वर का स्मरण करो इसी से ही तुम्हारा कल्याण होगा। तुम जीव को मारकर खुद अल्ला को प्रसन्न करना चाहते हो इससे ईश्वर प्रसन्न होने वाला नहीं है। मुहम्मद साहिब ने तो जो काफिर का अर्थ बताया था उसका तुम लोगों ने कुछ और ही अर्थ लगा लिया है । वे तो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ना चाहते थे न कि तोड़ना इतना सुन सधारी चुप हो गया।

❑ **सुनील गोदारा**

(व. अध्यापक संस्कृत, JRF)

- 5 LC, डाबला, तह. रायसिंह नगर

जिला- श्री गंगानगर (राज.)

मो. 8432227332

नशा: नाश की निशानी

नशा मनुष्य का प्राणघातक शत्रु है। अफीम, शराब, चाय, चरस, गांजा व भांग हानिकारक है। ये दुर्व्यसन मित्र के रूप में हमारे शरीर में घुसते है और शत्रु बनकर हमे मार डालते है।

ये दुर्व्यसन कुछ थोड़े से व्यक्तियों के जीवन को ही नष्ट नहीं करते वरन् बड़े-2 राष्ट्रों तक को पतन के गर्त में धकेल देते है। इतिहास साक्षी है कि मुगल साम्राज्य का पतन शराबखोरी के कारण हुआ। चीन अफीमखोरी में नष्ट हुआ। मिश्र, यूनान और रोम जैसे पुरातन शक्तिशाली राष्ट्र मद्य के फंदे में फंसकर पतन के गर्त में गिर गए। यही कारण है कि हिन्दू धर्मशास्त्रों में सुरापान की गिनती महापातकों में की गई।

मद्यपान धीमी आत्महत्या:- इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि अब शराब का प्रचलन दिनोदिन बढता जा रहा है जबकि इसमें न कोई शान है और न ही यह स्वास्थ्य की रक्षा करता है। मनुष्य जड़ बुद्धि, विवेकहीन, आक्रामक व अपराधी प्रवृति का हो जाता है। यह गलत ध ाारणा है कि शराब से शक्ति प्राप्त होती है। शराब पीने के कुछ काल तक हमारी संचित शक्ति उद्दीप्त मात्र होती है नई शक्ति नहीं आती है बल्कि नशे के बाद मनुष्य को निर्बल व निस्तेज बना जाती है।

सभ्यता की विष चाय:- सभ्य जगत ने अन्य नशीली वस्तुओं की तरह चाय व कॉफी को भी अपना लिया है। हमारे विद्यार्थी वर्ग में भी चाय का खूब प्रचलन है। चाय पिए बिना उनका पढाई में मन नहीं लगता है।

अफीम की मीठी मनुहार:- भारत में बच्चों तक को अफीम दी जाती है। जाड़े को भगाने एवं बीमारियां रोकने के लिए इसका प्रचलन आम है। बच्चों को अफीम देने से वे नशे में पड़ा रहता है किन्तु उनका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है, भूख मारी जाती है। उल्लास, उत्साह व प्रसन्नता उनके चेहरे से विदा हो जाती है। वृद्ध जन घर पर आए लोगों को अफीम मनुहार करके अपनी पहचान बनाना चाहते है। वे साथ में यह भी तर्क देते हैं कि लोगों को अफीम देने से पुण्य होता है। लेकिन वे नहीं समझते है कि जब हम अफीम की मनुहार करते हैं तो नशा नही करने वाले भी नशा करने लग जाते है। वे गरीबी के गर्त में चले जाते है। उनके बच्चे भूखे मरते है। उन बच्चों की अंतरात्मा अफीम मनुहार करने वाले लोगों पर रोती रहती है। नौनिहालों की अंतरात्मा को दु:ख पहुंचाकर ऐसे लोगों को पुण्य की बजाय पाप का भागी बनना पड़ता है। समय की आवश्यकता है कि समाज में अफीम मनुहार को बंद किया जाए। यारो! किसी की जिंदगी में अच्छा परिवर्तन लाकर स्वर्ग में न बदल सको तो बुरा परिवर्तन लाकर जिंदगी को नरक में ना बदलो।

अपील:- समाज के नौजवानों! तुम ऐसे समारोह व उत्सवों का बहिष्कार करो जिनमें नशे की मनुहार की जाती है। ऐसे उत्सवों को वीरान बना दोगे तो समाज में तेजी से बदलाव हो जाएगा।

❑ **मांगीलाल सिमरधाणी बिश्नोई**
छीतर बेरा भोजासर तह. - फलोदी
जिला. जोधपुर (राज.)
मो. 8057640806

कलयुग

सतयुग बिता कलयुग आया, देखो इस कलयुग की माया।
बेटा मात-पिता की न माने, बहु भी देती बात-बात पे ताने।
हो जाए गलती अनजाने, सुनो फिर बहु-बेटे के ताने।
बाप मनाऐ बेटा ना माने, जैसे हो उनके अन्जाने।
ये तो ईश्वर का स्वरूप, करके सेवा बदलो जीवन का रूप।
धरती मां भी खुश हो जाएंगी, बादल बरसाऐगा पानी।
मात-पिता की सेवा करके, बदल सके तो बदल जिन्दगानी।
सृष्टि का है खेल निराला, मात-पिता तुम्हें भी है कहलाना।
उस दिन मात-पिता के सुख खातिर, तुम भी हाथ फैलाओगे।
दुनिया सारी देखेगी तमाशा, करनी का फल पाओगे।

❍ **प्रेम.बी.पूनिया**
थला की ढाणी, रेण
तह.-मेड़ता जिला-नागौर (राज.)
फोन नं. - 094605-78406

घर में ही ईश्वर है (माँ–बाप)

''मुसीबत आदमी को इन्सान बना देती है। सेवा आदमी को भगवान बना देती हैं आप जिसको जानते हो उसको मानते नहीं हो। जिसको मानते हो, उसको जानते नहीं हो।।''

माता–पिता कि सेवा करने से ही सब मनोकामना पूरी होती है यह तो मोह जाल बना दिया है कि माँ कहाँ की बाप कहां का, माँ बाप ने हमेशा अपनों के लिए अच्छा ही अच्छा काम किया है और करते हैं। लेकिन औलाद लाखों में एक ही बड़ी मुश्किल से होती है जो उनका मन खुश कर सके। माँ–बाप औलाद के पेड़ की जड़ की तरह होती है ना कि सीढ़ी की तरह, पेड़ कितना ही हरा भरा क्यों नहीं हो लेकिन जब उसकी जड़ कट जाती है तो वह सूख जाता है। हम पिता कि नजर में भगवान देखते है माँ के चरणो में स्वर्ग।

जिसके भाग्य में माता पिता कि सेवा लिखी होगी वह ही सेवा कर सकेगा।

एक माता पिता के चार पुत्र थे–

पहला– माँ मै क्या करूँ उलझन में फंस गया हूँ अगर तुमको साथ लेता हूँ तो घरवाली नाराज हो जाए मैं मजबूर हूँ आपकी सेवा करने में।

दूसरे ने कहा माँ तेरी और मेरी घरवाली की बात–बात पर नहीं बनती मैं क्या करुँ तुम यहीं ठीक हो मेरे पास तो तुम्हारी निभनी मुश्किल हैं।

तीसरा बोला–अरे मेरी प्यारी मम्मी मैं तुमको मेरे साथ रख लेता लेकिन मेरे पास जगह कम है। तुम दु:ख पाओगी तुम जहाँ हो वहीं पर ठीक हो। माँ उदास हो गई और दु:ख में खो गई।

इस तरह तीनों बेटे बहाना बनाकर चले गये। चौथा बेटा अभी छोटा था माँ बाप भी बूढ़े हो चुके थे फिर भी आशा न टूटी उस बेटे का अच्छी तरह लालन पालन किया। जब वह बड़ा हुआ तो शादी के बाद वह भी बड़े भाइयो की तरह जा रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक गाड़ी की पीछे लिखा था माँ का आशीर्वाद– तो उसने पास की सीट पर बैठे एक सन्त से पूछा ज्यादातर गाड़ी के पीछे हमने माँ का आशीर्वाद लिखा देखा है पिता का आशीर्वाद क्यों नहीं लिखते। सन्त ने कहा कि इसका महत्व जानना है तो जो मैं कहूं वो करना। उसने कहा ठीक है तुम जाओ और पाँच किलो का पत्थर लेना और उसको कसकर पेट पर बाँध लेना और नाभी के ऊपर ही रखना, उसने ऐसा ही किया। लेकिन एक घन्टे में ही परेशान हो गया उठने बैठने शौच करने में परेशानी होने लगी पत्थर को खोलकर फैंक दिया । कहता है कि कहाँ कि आफत मोल ले ली नहीं। पूछता तो अच्छा होता, दो दिन बीत गये सन्त उससे मिलने गया और पूछा भाई मैने जो कहा वो किया। उसने कहा सन्त जी मैं तो एक घन्टे में परेशान हो गया। तब सन्त ने कहा तुम्हारी माँ तुम्हें नौ महिने पेट में लटका के रखा और तुम एक घन्टे में घबरा गये माँ नौ माह गर्भ के अन्दर लिए खाना खाती उठती बैठती घर का सारा–काम करती फिरी, फिर भी तुम्हे बोझ नहीं समझा। इसलिए माँ का बलिदान पिता की बजाय ज्यादा है। तब तो उठते बैठते दु:ख में हमेशा माँ को याद करते है। तब उसे इस बात का ज्ञान हुआ। एक माँ ने कितने कष्ट सहकर हमें अपने गर्भ में जगह देकर खून से संचित किया है। बाद में उसे 15–20 साल तक पालन पोषण किया आज उसके लिए जगह नहीं बड़े शर्म की बात है। माता–पिता की सेवा ही तीर्थ है कभी मौका मिले तो चूक मत जाना यह मौका बार–बार नहीं आता हैं। अगर औलाद से सेवा चाहते हो तो औलाद बनकर सेवा करो।

❑ श्री रमेश कुमार ईशरवाल
(बिश्नोई चक ढढू
त. फलोही जिला जोधपुर)
9928516684

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

ओ३म् टुका पाया मगर मचाया, ज्यूं हंडिया का कुत्ता। जोग जुगत की सार न जाणी, मूंड मुडाया बिगूता! चेला गुरु अपरचै खीणा, मरते मोक्ष न पायों

यह सबद गुरु जम्भेश्वर भगवान ने योगी लक्ष्मणनाथ मण्डली को सुनाया (ओ३म् टुका पाया मगर मचाया, ज्यूं हंडिया का कुत्ता) हे योगी, पुरूषों ! तुम्हारे लक्षण व आचरण से ज्ञात होता है कि तुम लोगों ने केवल साम्प्रदायिक चिन्ह व नाथ मात्र से योग धारण किया है। गृहस्थों से अधिक परिग्रह लेना, भिक्षा का भोजन कर, प्रमाद वश उन्मत के समान रहना तुच्छ बुद्धि वाले कुत्ते के समान है। बिना उद्देश्य (लक्ष्य) यज्ञ, तन्त्र, भ्रमण करते रहना आदि सब प्रमादी व तुच्छ गुरु के लक्षण है। (जोग जुगत की सार न जाणी) यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधी इन आठ अंग वाले योग की विधि को तुमने सद्गुरु से नहीं सीखा केवल मस्तक के बाल मुंडाकर अथवा भगवा कपड़े पहनकर बेकार हो गये हो। अर्थात् अब तुम न तो सद्गृहस्थ का कार्य कर सकते हो और न सन्त कार्य जो उत्तम ब्रह्म ज्ञान व योग है, उसे कर सकते हो? इस प्रकार नाम मात्र सन्त बनने से सभी सन्तों की बदनामी होती है (चेला गुरु अपरचै खीणा) गुरु और शिष्य जब तक पूर्ण साधना नहीं करते तब तक उन्हें मुक्ति की आशा नहीं करनी चाहिए। अत: शरीर छुटने से पहले सन्त को अवश्य आत्म कल्याण के लिए सात्विक साधना कर लेनी चाहिए। जब उसे पूर्ण आत्मज्ञान हो जाय अथवा परमात्मा का दर्शन हो जाय बिना मुक्ति हुए शरीर छूट जाने पर पता नहीं कितनी बार पुन: जन्मना व मरणा पडता है। शम, दम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधी ये योगी के आठ अंग है। इसका अनुष्ठान करने वाला योगी है।

शम :- अन्तकरण की संकल्प-विकल्प आदि वृतियों का रोकना शम कहलाता है।

दम :- इन्द्रियों को विषयों से हटाना अथवा इन्द्रियों को वश करना दम कहलाता है।

आसन :- पद्म आसन सिद्धासन आदि चौरासी आसन है।

प्राणायाम् :- पुरक, कुम्भक, रेचक, द्वारा प्राणों को यथा शक्ति वश में करना प्राणायाम कहलाता है।

प्रत्याहार :- साधना के समय चंचल मन विषयों की ओर जाता है। उसे विधी पूर्वक रोक कर हृदय में स्थित करना प्रत्याहार कहलाता है।

धारण :- जिस समय वाच घड़ी पर्यन्त प्राणवायु ब्रह्मारन्ध्र में रूक जाये तो धारण कहलाती है।

ध्यान :- साठ घड़ी प्राणों को वश में कर ब्रह्मारंद्र में रोकने को ध्यान कहते है।

समाधी :- बारह दिन तक योगी का प्राण स्थिर हो जावे तो समाधी कहलाती है।

इस शरीर में 72000 हजार नाड़ियां है। इस शरीर में दस द्वार है इन दस द्वारों में दस नाड़िया प्रधान है तीन नाड़िया अति उत्तम प्रधान है। इन पिंगला, सुषुम्ना, इडा नाड़ी में चन्द्रमा, पिंगला नाड़ी में सूर्य और सुषुम्ना नाड़ी में शिव स्वरूप से परमात्मा निवास करते हैं । इस संसार में कोई अपना दुश्मन नहीं है, दुश्मन अपने अन्दर ही है। काम, क्रोध, ईर्ष्या, मोह, लोभ व पांच तत्व से शरीर बना है। आकाश, वायु पृथ्वी, जल, अग्नि और जो आपको आंखो से दिख रहा है, वो सब नाशवान है। सिर्फ आत्मा ही अमर है। इसलिए मनुष्य को भौतिक बात में न पड़कर अपनी खुद की अमर आत्मा दर्शन वास्ते प्रयत्नशील रहना चाहिए। यह मनुष्य शरीर चौरासी लाख योनियों के बाद प्राप्त हुआ है। इस सुअवसर को वृथा नहीं गवाना चाहिए।

❑ **हनुमानाराम बिश्नोई** (चेनाणी)
गांव -भ्येनपुरा कलां , तहसील- फलोदी
जिला जोधपुर (राज.)
मों - 9166973655

जीव और ईश्वर

जीव (मनुष्य) और ईश्वर का स्वयं में एक शाश्वत सम्बन्ध है। विश्व के प्रत्येक प्राणी में ईश्वरीय अंश होने से वह प्रत्येक जीव से जुड़ा हुआ है लेकिन फिर भी वह नितांत पृथक् है। जिस प्रकार जल में कमल का पत्ता या कमल जल में रहते हुए भी उससे अलग है इसी प्रकार ईश्वर भी अंश रूप में व्याप्त होने पर भी हमसे अलग रहते हुए हमारी रक्षा का ध्यान रखता है। ईश्वर हममे उसी तरह व्याप्त है जैसे 'तिल में तेल, पहुप में बास'। जिस प्रकार तिल में तेल रहता पर दिखाई नही देता और फूल में सुगन्ध रहती है पर दिखाई नहीं देती। उसी प्रकार ब्रह्म हममें समाया है। ब्रह्म जब हममें समाया है तो वह हमें दिखाई क्यों नहीं देता या उसकी हमें अनुभूति क्यों नहीं होती ? इसके मुख्य कारण हैं कि हम बाह्य माया रूपी आवरण के घेरे में पड़े हुए हैं अर्थात् भोग शान्ति में लिप्त हैं, उससे बाहर नहीं निकल रहे है। जिसके कारण हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग उन भौतिक पदार्थो को संकलन करने में नष्ट कर रहे हैं।

ईश्वर ने हमें मानव जन्म केवल सांसारिक भोगों को भोगने के लिए नहीं दिया है। इसे उस ईश्वर की न्याय व्यवस्था या उसके बनाये हुए नियमों का पालन करते हुए प्रत्येक प्राणी के प्रति जो उस ईश्वर की देन है, उसके प्रति दया का भाव, उसके प्रति उदारता का भाव रखना है। तभी तो हमको मानवीय मूल्य प्राप्त होगा। संसार में सभी को ईश्वर से जुड़ने पर ही मूल्य प्राप्त होता है।

ईश्वर और जीव का अत्यन्त निकट का सम्बन्ध है उदाहरण स्वरूप जैसे लोहे और चुम्बक का सम्बन्ध होता है। फिर ईश्वर जीव को अपनी ओर आकर्षित क्यों नहीं कर पाता। इसका मुख्य कारण है कि जिस प्रकार लोहा कीचड़ से लिपटा होने पर चुम्बक लोहे अपनी ओर आकर्षित नहीं करती, उसी प्रकार मानव भी माया रूपी कीचड़ से ग्रस्त होने पर ईश्वर की ओर आकर्षित नहीं हो पाता। जब वह मायारूपी कीचड़ से दूर हो जाता है तभी मानव ईश्वर के नजदीक होता चला जाता है।

जीव (मानव) और ईश्वर का सम्बन्ध एक जल के बुलबुले के समान है। पानी और उसका बुलबुला दोनों एक ही है। जिस प्रकार पानी में बुलबुला उठता है और उसी में समा जाता है ठीक इसी प्रकार जीव (मानव) उस ब्रह्म में समा जाता है दोनों में केवल अंतर एक है कि एक सीमित है और दूसरा अनन्त है।

उस अनन्त ईश्वर को जानना तो समुद्र की गहराई नापने जैसा प्रयास है। ईश्वर को यदि जानना है तो प्रथमत: उसकी व्यवस्था एवं उसके नियमों का पालन करते हुए उसके अनुरूप स्वयं को ढालना होगा। गुरु जी ने अपनी वाणी में कहा है कि **''सुरपति साथ सुरा सूंरग, सुरपति सुरा सूं मेलूं''।**

जीव (मनुष्य) और ब्रह्म तात्विक रूप से भी एक है। लेकिन एक होते हुए भी नितांत पृथक् है। उस ईश्वर को तो केवल वही जान पाता है जिस पर उसकी कृपा होती है या जिसके हृदय में ज्ञान की ज्योति जाग्रत हो जाती है। गुरु जी ने अपनी वाणी में कहा है। **'लेसी जाके हृदय लोपण, अन्धा रहा इवाणी ''।**

उस ब्रह्म को यदि पाना है तो अनन्य भाव से विष्णु भगवान की शरणा गति अर्थात मन बुद्धि और इंद्रियों सहित सारे शरीर को ऐसा ब्रह्ममय कर लो जैसे मोड़े हुए आटे और जल एक रस हो जाता है। गुरु जी ने अपनी वाणी में कहा है 'मांडो कांध, विष्णु कै सरणै'।

अत: उक्त संदर्भो के आधार पर स्पष्ट है कि ईश्वर और (मानव) जीव का स्वयं में एक शाश्वत सम्बन्ध है, जो सृष्टि के आदि से है।

❑ **जय प्रकाश बिश्नोई**
गली न. 2, निकट शिव मूर्ति
चाऊ की बस्ती, लाईन पार
मुरादाबाद (यू.पी.)
मो. 9258835899

पर्यावरण और प्रकृति हमारी संजीवनी

पर्यावरण का मूलार्थ है हमारे चारों ओर का आवरण। पर्यावरण व्यापक व समग्र शब्द है। पर्यावरण बहुआयामी बहुअंगीय है। जैसे प्राकृतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक रचनात्मक कलात्मक, मानसिक शाब्दिक, वैचारिक, बौद्धिक, पारिवारिक आदि पर्यावरण। जो पर्यावरण प्राणीमात्र को जीवन प्रदान करें, जीवन को स्वस्थ, नीरोग एवं दीर्घायु प्रदान करें वह प्रकृतिक पर्यावरण है। प्राकृतिक पर्यावरण पंचागी है जिसके अन्तर्गत भूमि, जल वायु, अग्नि, आकाश आदि आते हैं। वायु का जन्म वृक्षादि से होता है। पर्यावरण प्राणी मात्र के जीवन का मूलाधार है। पर्यावरण, प्राणी जगत, जीव जगत का प्राण है।

पर्यावरण के विभिन्न अंग ही प्राणी के जीवन को संवारते है। उसका शृंगार करते हैं। पर्यावरण मनुष्य मात्र का तो प्राणों का स्पंदन है। उसकी अंतर बाह्य कार्यो की संजीवनी औषधी है। पर्यावरण से ही विस्तृत होता है सजीव जगत का स्वास्थय नीरोगता एवं दीर्घायु होने का रहस्य। पर्यावरण, प्राणी मात्र की दैहिक, मानसिक प्रकृति का प्राणेश्वर है। पर्यावरण का स्वस्थ होना, पुष्पित पल्लिवत होना, समग्र प्राणी जगत के जीवन का शृंगार है। इसी से प्राणी जगत के जीवन का विस्तार है। पर्यावरण मूलत: प्रकृति ही है जो परोक्षत: परमात्मा का स्वरूप है। पर्यावरण (मूलत: प्रकृति सघन वृक्षादि) को गर्भ दृष्टि से निहारना जगतेश्वर को ही निहारना है। पर्यावरण केवल देह और मन को ही हृष्ट, पुष्ट समृद्ध एवं स्वस्थ नीरोग नहीं रखता बल्कि विचारों को भी स्वस्थ, समृद्ध एवं बलशाली बनाता है।

पर्यावरण, विचारों में नैतिक, बौद्धिक, मानवीय एवं रचनात्मक व कलात्मक दृष्टि प्रदान करता है। पर्यावरण की अग्नि, जीवन दीपक को ज्ञानालोक प्रदान करती है। यह मनुष्य को आत्म ज्ञान पथ पर प्रशस्त करता है। पर्यावरण जीवन पथ के मार्ग के मील का पत्थर है। निरंतर पर्यावरण का नष्ट हो जाना, प्राणी मात्र के प्राण जीवन का ही नष्ट हो जाना है। पर्यावरण का मुख्यांग वृक्ष होते हैं जो मनुष्य मात्र की प्राण वायु है। निरंतर पर्यावरण का नष्ट होना, सजीव जगत के जीवन का अल्पायु होना है। पर्यावरण का रिश्ता है मनुष्य की मानसिक संतुष्टि एवं पुष्टि से। पर्यावरण का न होना प्राणजगत की समाप्ति का उद्घोष है। पर्यावरण का केन्द्रीय तत्व वृक्ष है। आध्यात्मिक दृष्टि से वृक्षों की महिमा का गान, उनकी महत्ता का संपादन, उनकी महिमा का मण्डन शास्त्रों ने वेदों ने भी किया है। वृक्ष हमारे पितृ हैं वृक्षारोपण महापुण्य का कार्य है। वृक्षों में कुछ वृक्षों को देवयोनी की संज्ञा दी गई है (शास्त्रों में) पीपल की महत्ता का संपादन तो योगेश्वर, सर्वेश्वर अजन्मा, अविनाशी कृष्ण ने भी गीता में किया है। वस्तुत: वृक्ष इस धरती के अनुपम अद्भुत शृंगार है। वे धरती माता के प्राणों का स्पंदन है। धरती इनके माध्यम से साँस लेती है। वे धरती, धरतीवासी, धरती पुत्रों की प्राण वायु हैं। धरती के मुकुटमणी है। धरती के शिरोमणि है। जिनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसे जीवन जनक, जीवनपालक, जीवन पोषक धरती के अनुपम शृंगार को नष्ट करना स्वयं अपने जीवन की हत्या करने जैसा है। वृक्षों की निरंतर निर्ममता के साथ नृशंस कटाई, मनुष्य में साक्षात् राक्षसीकरण का ही प्राकट्य है। वृक्षों की समाप्ति, मनुष्य प्रजाति के जीवन में आग लगाना है। अंधाधुंध कटाई सजीव जगत को मौत के हवाले करना है। (मौताधीन) करना है।

वस्तुत: वृक्ष रुपी जीवंत जीवमान प्रकृति मनुष्य मात्र के साँसों की गंगोत्री (उद्गम) है। वृक्ष जीवन देवता है जिनकी उपासना हमें करनी चाहिए। वृक्षों में समायी बहुकोणीय औषधी, जड़ी-बूटी, जलाकर्षण

क्षमता प्राणवायु सुगंध, संजीवनी उनमें समाहित उदारता, सहिष्णुता, साहचर्यता, सहकारिता, सहनशीलता एवं सरलता, उनके समग्र व्यवहारिक व आध्यात्मिक दर्शन का अवतरण ही है। वृक्ष समूची धरती के षड़रस है। वृक्षों का चरित्र समूची मानवता को गढ़ने का महादर्शन है। वृक्षों का मौन उनमें समाहित प्रकृति के तमाम दर्शन का प्रकटीकरण है। अत:ऐसे सजीव जगत के जीवन प्राण धरती के शृंगार वृक्ष प्रकृति को जिंदा रखना प्रकृति पंचागों को सवृक्ष आरोपित करना, उनका विस्तार करना धरती को जल, मिट्टी, वृक्षादि से आप्लावित करना धरती का शृंगार प्रकृति के समस्त अंगों से करना आज मनुष्य का परम धर्म है। प्रकृति हमारी माँ है हम उसके बेटे। हमारा कर्त्तव्य है वृक्ष बेटों से उजाड़े नहीं, उसकी गोद को सूनी नहीं करें। उसकी माँग में चहु ओर चतुर्दिश सुंदरता नैतिक तत्वों के सिंदूर को भरें। उसे सौंदर्य से भर दें। पर्यावरण के वस्त्र उसे पहनायें। लहलहाते पुष्पित, पल्लवित, मधुमाते वृक्षों की पायल पहने ये धरती हमें सभी मानसिक शांति वैचारिक संतुष्टि एवं मानवीय गुणों की राशी प्रदान करेगी। खुशहाल रहेंगे हम खुशहाल रहेगी हमारी आने वाली पीढ़ी। अन्यथा, पर्यावरण के बिना हम, हमारा वर्तमान, हमारा भविष्य अंधियारी गलियों में निरुद्देश्य भटकता रहेगा जिसकी न कोई दिशा होगी न कोई दर्शन। दुर्भाग्य के पत्थरों से टकरा टकराकर हमारा वर्तमान एवं भविष्य लहूलूहान हो जायेगा मात्र रहेंगे हमारे पापों के अंधे, बहरे, लूले लंगड़े रोते, गिड़गिड़ाते बिल बिलाते बिलाव। चारों ओर रहेगा सन्नाटा हमारे अज्ञान तिमिर का और हमारी मनुष्य प्रजाति का लेश मात्र भी शेष नहीं रहेगा। अत: वृक्षारोपण, प्रकृति को स्थापित करना ही आज का राष्ट्रीय धर्म है, युगधर्म है।

❍ **उमेश दुबे**
खातेगांव, जि. देवास (म.प्र)

धर्म का सच्चा वरण करो

'' कहता समय पुकार, धर्म का तुम अनुसरण करो।
धर्म का सच्चा वरण करो।।

नहीं निर्माण समय अब देखो, मठ, मंदिर, गुरुद्वारों का।
आओ मिलकर सृजन करे सब, नूतन विमल विचारों का।।
भव पथ पर सद् धर्म सुमन की, सुखद, सुवास बिखर जाये।।
झूठे जग की मोहक छलना, कभी न हमको भटकाए।।
करो साधना कर्म योग की, जड़ता जरणा करो।।
धर्म का सच्चा वरण करो।।

सत्य और निष्काम भाव से, सेवा भाव गहो।
मानवता के संवर्द्धन में, रत दिन-रैन रहो।।
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, क्या तुमको दे पाये।
हिंसा, कलह, घृणा पैदा कर, श्रोणित छलकाये।।
तोड़ो इनके मोह-जाल को, सद्पथ चरण धरो।।
धर्म का सच्चा वरण करो।।

सच्चा धर्म निहित है मन के, सूक्ष्म भाव संचारों में।
होता है अवतरित जगत में, सदाचार सुविचारों से।।
सुविचारों की अभिव्यक्ति से, सत् साहित्य सृजित होता।
जो मानव के मन मंदिर के, सकल विकारों को धोता।।
मन मंदिर से आडम्बर की, प्रतिमा हरण करो।।
धर्म का सच्चा वरण करो।।

सच्चा धर्म दीन दुखियों का, 'सेवक' बन जाना।
सच्चा धर्म जगत में परहित, करते मिट जाना।।
सच्चा धर्म कर्म के पथ पर, आगे बढ़ जाना।
सच्चा धर्म लक्ष्य पाने को, उन्मत हो जाना।।
तेज पुंज बन अज्ञातमा का, तम आवरण हरो।।
धर्म का सच्चा वरण करो।।

❑ **राजकुमार सेवक**
संगठन सचिव, जांभाणी साहित्य अकादमी
रसूलपुर गुज्जर, कांठ, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

सामाजिक हलचल

आसोज मेला मुकामःएक झलक

वर्ष भर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले जांभाणी मेलों में मुक्तिधाम मुकाम में आसोज व फाल्गुन की अमावस्या को लगने वाले दो मेले अपना सर्वोपरि स्थान रखते है।वस्तुतःये बिश्नोई समाज के महाकुंभ होते है जिनमें पूरे भारत वर्ष के बिश्नोई इक्ट्ठे होते हैं। इस वर्ष भी 15 अक्तूबर को आसोज मेले का आयोजन बड़े धूमधाम से हुआ, जिसमें लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर गुरु जंभेश्वर भगवान के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किए। सप्ताह भर पहले से ही मुकाम में आयोजित साप्ताहिक कथाओं, भजनों,साखियों, सबदों के उच्चारण से वातावरण आध्यात्मिक हो उठा तथा श्रद्धालुओं की चहल-पहल से मेले जैसा वातावरण निर्मित हो गया। महासभा की ओर से मेला-बाजार व सम्पूर्ण मेला परिसर की व्यवस्था हेतु सप्ताह भर पहले ही तैयारियां प्रारम्भ कर दी गई।

महासभा की बैठक को सम्बोधित करते चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई।

13 अक्तूबर को ही देश के विभिन्न भागों से अखिल भारतीय गुरु जंभेश्वर सेवक दल के समर्पित सदस्य मुकाम पहुंचने शुरु हो गये और 13 अक्तूबर की शाम होते-होते मेले की व्यवस्था का भार सेवकदल ने अपने कंधो पर ले लिया। 14 अक्तूबर की दोपहर तक मेला परिसर में श्रद्धालुओं की चहल-पहल बढ़ चुकी थी। 14 अक्तूबर को सांय 5 बजे अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की आम बैठक महासभा के संरक्षक चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई की अध्यक्षता में आरम्भ हुई। बैठक में महासभा के महासचिव ने कार्यकारी अध्यक्ष स्व. रामानारायण बिश्नोई के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव रखा। सभी सभासदों ने दो मिनट का मौन धारण कर स्व. बिश्नोई की आत्मिक शान्ति के लिए प्रार्थना की, तत्पश्चात् श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। महासभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ताराचन्द खिचड़ ने श्रद्धांजलि देते हुए स्व. बिश्नोई के सामाजिक योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री रामस्वरूप धारणिया नोखा ने कहा कि स्व. रामनारायण जी समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे, उनके जाने से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। श्री कृष्ण कड़वासरा एडवोकेट ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्व. बिश्नोई मूल रूप से पंजाब के थे ओर पंजाब से उन्हें अत्यधिक लगाव भी था। बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू ने कहा कि स्व. रामनारायण जी समाज के वरिष्ठ राजनेता व समर्पित समाजसेवी थे, उनके निधन से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। दिल्ली संस्थान के अध्यक्ष श्री हनुमान सिंह ने अपने शोक संदेश में स्व. रामानारायण जी को मृदुभाषी व स्वरूछ छवि वाला राजनेता बताया। सेवकदल के अध्यक्ष श्री सीताराम माझूं ने कहा कि स्व. बिश्नोई समाज के समर्पित सेवक थे। श्री प्रदीप बिश्नोई ने उतरप्रदेश व श्री भूरेलाल खोखर ने मध्यप्रदेश के बिश्नोई समाज की ओर से स्व. रामनारायण जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए। डॉ. (श्रीमती) सरस्वती बिश्नोई व श्री राजाराम धारणिया ने भी स्व. रामनारायण जी के निधन पर शोक प्रकट किया।

पूर्व सांसद श्री जसवंत सिंह जी ने श्रद्धांजलि

सभा में बोलते हुए कहा कि स्व. बिश्नोई के निधन से हमने एक वरिष्ठ राजनेता व समाज का शुभचिंतक खो दिया है, इस हानि की पूर्ति नहीं हो सकती। पूर्व विधायक श्री हीरालाल बिश्नोई ने कहा कि स्व. रामानारायण जी एक प्रतिष्ठित कानूनविद् व कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ आम व्यक्ति के हमदर्द थे तथा जरूरतमंद की सहायता करते थे। पूर्व संसदीय सचिव श्री दूड़ाराम जी ने कहा कि स्व.रामानारायण जी एक सुलझे हुए इंसान थे और पिछले 60 वर्षो से एक सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में समाज की सेवा कर रहे थे। श्री लादूराम बिश्नोई ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि स्व. बिश्नोई के निधन से महासभा के साथ-साथ पूरे समाज को हानि हुई है। स्वामी रामानंद जी ने अपने शोक संदेश में कहा कि समाज के संगठन में रामनारायण जी सदैव सकारात्मक कार्य करते थे। चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई ने स्व. रामानारायण को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि स्व. बिश्नोई एक वरिष्ठ राजनेता, प्रसिद्ध अधिवक्ता और समर्पित समाजसेवी थे। उनसे हमें प्रेरणा व मार्ग दर्शन मिलता था। उनकी कमी हमेशा खलेगी। उन्होंने कहा कि 15 अक्तूबर को होने वाला खुला अधिवेशन शोक स्वरूप नहीं होगा।

जाम्भाणी साहित्य अकादमी की बैठक में पुस्तक का विमोचन करते स्वामी कृष्णानंद जी व अन्य अतिथिगण।

14 अक्तूबर की रात्रि को विशाल जागरण का आयोजन किया गया। जागरण में जांभाणी साहित्य अकादमी के अध यक्ष स्वामी कृष्णानंद जी ने जांभाणी साहित्य पर विस्तार से प्रकार डाला। स्वामी रामानन्द जी ने 29 धर्म-नियमों की आचार संहिता के बारे में बताया। डॉ. गोवर्धनराम आचार्य ने सामाजिक कुरीतियों को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। रात्रिभर साधु-सन्तों एवं गायणाचार्यो ने साखी, भजनों आरतियों व सबदों के माध्यम में गुरु महाराज की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला।

15 अक्तूबर को प्रातः निज मंदिर, मुकाम व संभराथल धोरे पर विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। घी-खोपरों की आहुति देकर श्रद्धालुओं द्वारा अपने को कृतार्थ करने का कार्यक्रम दिनभर चलता रहा। मुख्य मंच से 15 अक्तूबर को दिनभर साधु-संतों, गयणाचार्यो व गायक कलाकारों द्वारा गुरु महाराज की साखियों, सबदों, भजनों व आरतियों का गायन होता रहा। मुकाम व संभराथल के साथ-साथ पीपासर में भी दिनभर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अमर ज्योति, जभं-ज्योति, जम्भादेश, बिश्नोई संदेश आदि पत्रिकाओं व गीताप्रैस व जांभाणी साहित्य अकादमी की ओर से पुस्तकों की स्टाल लगाई गई। इन पत्र-पत्रिकाओं व जांभाणी साहित्य के प्रति श्रद्धालुओं का विशेष उत्साह देखने को मिला। प्रसिद्ध पर्यावरण प्रेमी खम्मुराम व उनके साथियों ने मेला परिसर को पॉलिथीन आदि से मुक्त रखने के लिए विशेष जागरूकता अभियान भी चलाया।

14 अक्तूबर को 1 बजे जांभाणी साहित्य अकादमी की बैठक अध्यक्ष स्वामी कृष्णानंद जी के सान्निध्य में मुकाम में उतरप्रदेश धर्मशाला में सम्पन्न हुई, जिसमें सभी जांभाणी साहित्यकारों व साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया। इस बैठक में उतरप्रदेश के कवि राजबीर सिंह द्वारा रचित 'खेजड़ली गाथा' पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मेले में व्यवस्था व शांति बनाए रखने के लिए श्री देवेन्द्र भादू एडिशनल एस.पी. के नेतृत्व में राजस्थान पुलिस व सेवकदल के सदस्यों ने सराहनीय सेवा की। इस मेले में उतरप्रदेश के श्रद्धालुओं ने भारी संख्या में भाग लिया, जो पहली बार देखने को मिला।

भूल सुधार : अक्तूबर 2012 के अमर ज्योति के पृष्ठ 19 पर श्री बंसीलाल ढाका का मोबाइल नम्बर 9460535729 लिखा गया है कृपया करके इसे 9460538429 पढ़ा जाए।

पीपासर में जीव रक्षा सम्मेलन संपन्न

श्री गुरु जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीवरक्षा प्रदेश संस्था का प्रथम प्रान्तीय अधिवेशन नागौर जिले के ग्राम पीपासर में 14 अक्टूबर 2012 को भव्य समारोह के रूप में आयोजित किया गया। संस्था के प्रदेश मीडिया प्रभारी रामप्रसाद बिश्नोई के अनुसार मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य स्वामी रामानन्द जी ने जीवरक्षा,नशामुक्ति,पर्यावरण संरक्षण तथा संस्कार निर्माण पर विस्तार से प्रकाश डाला, उन्होनें भावी पीढी को नशामुक्त रहने की प्रेरणा दी। वन्य जीवों के शिकार की घटनाओं का प्रदेश स्तर पर, एक साथ विरोध करने तथा संगठित रहकर संस्था का ग्राम ईकाई तक विस्तार करने की महत्ती आवश्यकता जताई। उन्होनें नवगठित संस्था से जुड़ने वाले सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को धन्यवाद दिया। समारोह की मुख्य अतिथि एवं जिला प्रमुख नागौर श्रीमती बिन्दु चौधरी ने जीवरक्षा एवं वृक्ष रक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा करने के लिए बिश्नोई समाज की सेवाएं अनुकरणीय बताई। संस्था के उद्देश्यों का स्वागत करते हुए श्रीमती चौधरी ने हरवक्त सहयोग देते रहने का विश्वास दिलाया। उन्होनें इस अवसर पर मंदिर परिसर में पीपल का पौधा लगाया, वृक्षारोपण की प्रेरणा दी। नागौर जिले के संस्था संरक्षक एवं पीपासर साथरी के महन्त स्वामी भक्तिस्वरूप जी महाराज ने संस्था के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा जीवरक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा दी।

हनुमानगढ़ के जिलाध्यक्ष मनोहरलाल कड़वासरा ने वृक्ष रक्षा के लिए बिश्नोई समाज द्वारा दिए गए बलिदान की घटनाओं का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया। उन्होनें खेजड़ली बलिदान की घटना को राजस्थानी लोक काव्य के माध्यम से प्रस्तुत कर श्रोताओं को गद्‌गद कर दिया।

संस्था के प्रदेशाध्यक्ष श्री रामरतन बिश्नोई ने संस्था गठन की आवश्यकता के सम्बन्ध में जानकारी दी। एवं आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया। उन्होनें बिश्नोई बाहुल्य क्षेत्र जिला श्रीगंगानगर के जिलाध्यक्ष श्री हंसराज तरड़, हनुमानगढ़ के जिलाध्यक्ष मनोहरलाल कड़वासरा, बीकानेर के जिलाध्यक्ष हनुमानराम दिलोईया, नागौर के जिलाध्यक्ष मांगीलाल भादू, जोधपुर के जिलाध्यक्ष पप्पूराम भादू, बाड़मेर के जिलाध्यक्ष जयकिशन भादू, बाड़मेर के संरक्षक दयाराम हंसमुख, जालोर के जिलाध्यक्ष हीरालाल गोदारा सहित सभी जिलाध्यक्षों के संगठन में सराहनीय सहयोग की भूरी-भूरी प्रशंसा की। प्रदेश महामंत्री एवं बीकानेर संभाग के प्रभारी मानद् वन्यजीव प्रतिपालक अनिल धारणियां ने सम्मानित होने बाली प्रतिभाओं की जानकारी दी। आचार्य स्वामी रामानन्दजी महाराज ने प्रथम अधिवेशन के अवसर पर संस्था द्वारा प्रकाशित स्मारिका (परिचयावली) का विमोचन किया।

हैदराबाद में गुरु जम्भेश्वर मंदिर का निर्माण जारी

आन्ध्रप्रदेश के हैदराबाद शहर के जी.डी. औद्योगिक क्षेत्र के सुभाषनगर में एक भव्य गुरु जम्भेश्वर मन्दिर का निर्माण कार्य जोर -शोर से चल रहा है। इस मन्दिर का भ्रमण हरियाणा राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक पंचकुला के डिप्टी सैक्रेट्री व मुख्य कार्यकारी अधिकारी कुरुक्षेत्र श्री ओमप्रकाश जाजुदा ने 11 सितम्बर 2012 को किया जब वे हैदराबाद में बैंकिग क्षेत्र कें विशेष प्रशिक्षण पर गए हुए थे। स्थानीय बिश्नोई सभा के कोषाध्यक्ष श्री ठाकरराम खिलेरी ने उन्हें बताया कि इस मन्दिर का निर्माण जोधपुर के पत्थर से किया जा रहा है तथा इस मन्दिर पर लगभग 50 लाख रुपये का अनुमानित खर्च होगा। इस अवसर पर बिश्नोई सभा हैदराबाद के हनुमान जी जाणी, भागीरथ जी कड़वासरा, श्रवण जी खिलेरी आदि ने बताााया कि हैदराबाद में 1500 बिश्नोई परिवार निवास करते है तथा ज्यादातर स्टील के व्यवसाय में लगे हुए है। सन्त आचार्य भगीरथ दास जी तथा अन्य संत महापुरुष गुरु जम्भेश्वर जागरण व हवन आदि के लिए यहां भ्रमण करते हैं।

ओमप्रकाश जाजुदा, प्रधान
अ.भा. गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति

अखिल भारतीय गुरू जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति द्वारा नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

अखिल भारतीय गुरू जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति ने हर वर्ष की भांति मुकाम मेले के शुभ अवसर पर 30वां चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। दिनांक 14 अक्तूबर से 16 अक्तूबर 2012 तक लगाए गए शिविर में वरिष्ठ चिकित्सक डॉ0 शंकरलाल बिश्नोई सिटी हस्पताल घडसाना के मार्गदर्शन में हजारों मेलार्थियों ने स्वास्थय लाभ लिया। इस चिकित्सा शिविर में डॉ0 महाबीर जौडा बडोपल, श्री सुभाष छींपा किरढ़ान, फार्मासिस्ट श्री नरसी कड़वासरा, श्री दलीप मांझू रेलवे बीकानेर व श्री विनय खीचड़ ने विशेष रुप से सेवा प्रदान की। इस शिविर को सफल बनाने में मुख्य संरक्षक श्री प्यारे लाल कड़वासरा, प्रधान श्री ओमप्रकाश जाजुदा, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष सिहाग व महासचिव डॉ0 मदन खिचड़ ने विशेष योगदान दिया।

सूचनाः अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति की कार्यकारिणी ने अपने सभी आजीवन सदस्यों के पूर्ण विवरण सहित डायरेक्टरी 2012 का प्रकाशन किया है, सभी सदस्यों से निवेदन है कि वे डायरेक्टरी बिश्नोई मन्दिर स्थित कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं ।-डॉ0 मदन खिचड़ महासचिव, अखिल भारतीय गुरू जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति, Email : gjkksamiti@gmail.com, 09416995529

शहीदों की याद में खेजड़ली में लगा मेला

''जात पांत पुछे ना कोई, हरि का भजे सो हरि का होई।
जीव रक्षा से जुड़ लो बन्दों, काम परमार्थी होई''।।

जीवन की रक्षा के लिए, समाज की रक्षा के लिए, देश की रक्षा के लिए, विश्व की रक्षा के लिए आपको अनेक उदाहरण मिल जाएगें। लेकिन एक वृक्ष की रक्षा करते हुए अपना प्राण न्यौछार कर देना। ऐसी दर्दनाक घटना आप राजस्थान राज्य के जोधपुर जिले में खेजड़ली गांव में ही देख सकते है। सन् 1730 भाद्रपद दसमी दिन मंगलवार राजा अभय सिंह की सेना मन्त्री गिरधर दास भण्डारी के नेतृत्व में खेजड़ली गांव में वृक्षों को काटने गई। पर्यावरण की वीरागंना 'अमृता देवी बैनिवाल' ने जब बाहर कुछ अवाज सुनाई दी तो पता चला कि पास में ही सैनिक लोग वृक्ष काटने आए है तो उन्होंने मन्त्री गिरधर दास को वृक्ष न काटने का निवेदन करने लगी। परन्तु राज कर्मचारी नहीं माने तो गुरू जम्भेश्वर महाराज द्वारा बनाए हुए 29 नियमों में वृक्ष न काटना की पालना करते हुए कहा कि '' सिर साटे रूखं रहे। तो भी सस्तो जाण'' कहते हुए खेजड़ी वृक्ष के लिपट गई। देखते ही देखते 363 वीर बिश्नोई शहीद हो गए। उन वीर बिश्नोइयों को श्रद्धाजंलि अर्पित कर उनकी शहादत को सलाम किया जा सके। इस उद्देश्य हेतु 25 सितम्बर 2012 को विशाल जन समूह एकत्रित हुए। जो मेला का रूप धारण कर लिया। मेले का सामान्य अर्थ मिलन समारोह से है। 24 सितम्बर, 2012 की शाम को जागरण का आयोजन हुआ। जिसमें सन्तो द्वारा गुरु महाराज को आरतियो, साखियों व भजनो से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया, गुरु महाराज की अमृतमयी वाणी सन्तो से सुनते-सुनते कब सवेरा हुआ पता ही नहीं चला। सुबह 120 सबदों का हवन हुआ, हवन के बाद पाहल का आयोजन हुआ। हरियाणा, पंजाब , मध य-प्रदेश, गुजरात व राजस्थान से पधारे हुए सभी धर्म प्रेमियों ने पाहल लेकर शहीद स्मारक पर नतमस्तक होकर मन में प्रण लिया कि जिस प्रकार हमारे पूर्वज वृक्षों के लिए शहीद हो गए। तो हम भी आज बुरी आदतों को छोड़कर घर जाकर एक वृक्ष जरूर लगाएगें। क्योंकि वन विभाग द्वारा पौधों की ट्राली मेले में मेलार्थियों को देने के लिए उपलब्ध थी। इस अवसर पर बिश्नोई टाईगर फोर्स व अन्य संगठनों ने रक्तदान शिविर लगाकर उसमे अपना रक्त दान किया तथा मंच पर सामाजिक नेताओं ने जीव रक्षा व वृक्ष पर बल देते हुए कहा कि इनकी रक्षा करना हमारा धर्म है जब हम इनकी रक्षा करेंगे तभी हम बिश्नोई कहलाने के हकदार होंगे क्योंकि बिश्नोई समाज परोपकार की भावना से ही प्रसिद्ध है। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने अपनी सबदवाणी में बार-बार जीवों व हरे वृक्षों की रक्षा करने का सन्देश दिया है। मेला क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण समिति के सदस्य पॉलिथीन का प्रयोग न करने के लिए दुकानदारों व मेलार्थियों से निवेदन कर रहे थे। यह मेला अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा एवं अखिल भारतीय जीव रक्षा सभा ने भी बिश्नोइयों द्वारा वृक्षों की रक्षा के लिए किए गए बलिदानों का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया।

वृक्षों के रक्षार्थ 363 शहीदों के राष्ट्रीय स्मारक का शिलान्यास चौधरी भजनलाल जी, कृषि मन्त्री भारत सरकार के कर कमलों द्वारा दिनांक 10 सितम्बर 1989 (भाद्रपद सुदी 10 सवत् 2046) को किया गया। मेले की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए वहां के स्थानीय सेवक-दल या अखिल भारतीय गुरु जंभेश्वर सेवक-दल का होना बहुत जरुरी है ताकि बाहर से आने वाले यात्रियों के लिए भण्डारे में लंगर व्यवस्था तथा मेला क्षेत्र में यातायात व जूते स्थल आदि की व्यवस्था ठीक ढंग से हो सके। मेले में अमर-ज्योति, जम्भ-ज्योति पत्रिका के साथ-साथ अन्य ध ार्मिक पुस्तकों की भी स्टॉल लगाई गई। इस मेले के समापन पर सभी श्रद्धालुओं ने हृदय में अपार श्रद्धा को संजाये हुए अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान किया।

मेले में आए हुए श्रद्धालुओं की अपील:-

(1) मेले में पुलिस प्रशासन को चाहिए कि मेले में शान्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए महिला पुलिस की संख्या बढाई जाए।

(2) मेला परिसर के अंदर लगी दुकाने सभी बहार लगाई जाएं ताकि यहां पांलिथीन, कागज आदि से गंदगी न फैले।

(3) असामाजिक तत्वों को रोकने के लिए सेवक-दल की अच्छी संख्या होनी चाहिए।

(4) बाहर से आए हुए श्रद्धालुओं के लिए स्नान व रहने की व्यवस्था होनी चाहिए।

-संदीप गोदारा
व्यवस्थापक, अमर ज्योति

चौ. भजनलाल जयंती पर बिश्नोई मंदिर हिसार में यज्ञ

'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी, पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा की जयंती पर 6 अक्तूबर, 2012 को बिश्नोई मंदिर हिसार में विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री बनवारी लाल सोढ़ा व अन्य गायणाचार्यो ने 6 अक्तूबर की प्रात: 120 सबदों का पाठ कर यज्ञ किया व पाहल बनाया। यज्ञ में पूर्णाहुति चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, सांसद (हिसार) द्वारा दी गई। इस अवसर पर पूर्व सांसद पंडित रामजीलाल, श्रीमती जसंमा देवी पूर्व विधायिका, सभा प्रधान श्री सुभाष देहडू, श्री राजाराम खिचड़ कोषाध्यक्ष, श्री मनोहर लाल गोदारा सचिव, सभा के उपप्रधान श्री हेतराम धारणिया पूर्व आईपीएस, श्री अमर सिंह मांझू, रामकुमार कड़वासरा, भगवानाराम फुरसाणी, कृष्ण राहड़, कृष्ण बैनिवाल, संयुक्त सचिव जगदीश कड़वासरा, श्री अशोक बिश्नोई पूर्व एचसीएस सहित समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

यज्ञ में आहुति देते चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई।

सोनड़ी में भादो मेला सम्पन्न

श्री गुरु जम्भेश्वर धाम सोनड़ी बाडमेर जिले से 100 किलोमीटर दूर पश्चिम में विशाल रेगिस्तान टिलों के बीच हरियाली से घिरा हुआ विशाल मन्दिर जो पूर्णतया प्राकृतिक एवं शुद्ध पर्यावरण कि गोद में समाया हुआ है। विष्णु धाम सोनड़ी में बिश्नोई लोग बाहर से आकर बसे थे। उस समय से लेकर आज दिन तक अखण्ड ज्योति और सुबह शाम यज्ञ होता है। विष्णुधाम में वर्ष में तीन मेले लगते है। फाल्गुण, चैत्र और भादवा की अमावस्या को मेला भरता है। भादवा की अमावस्या का विशाल मेला 17 अगस्त को भरा। 16 अगस्त शाम को विशाल जागरण हुआ जिसमें बिश्नोइयों के तीर्थ शिरोमणि जाम्भोलाव से पधारे स्वामी भजनदास जी ने अपनी मधुरवाणी से आरती से भक्तों का दिल जीत लिया। 17 अगस्त को प्रात: 8 बजे यज्ञ शुरु हुआ जिसमें सोनड़ी के महन्त स्वामी हरी दास जी एवं रामानन्द जी ने गुरुवाणी के 120 शब्दों का यज्ञ कर पाहल बनायाअब लोगों को इंतजार था बिश्नोई समाज सेवा समिति सोनड़ी के खुले अधिवेशन का। खुले अधिवेशन में विशिष्ट अतिथि सुखराम साऊ पूर्व प्रधान सांचोर ने कहा कि समाज को अच्छा समाज बनाना हो जो समाज अच्छी शिक्षा, खान-पान, रहन-सहन और बोलचाल से अच्छे संस्कार देने होंगे। अधिवेशन में मुख्य अतिथि लाधुराम बिश्नोई पूर्व सलाहकार मुख्यमंत्री ने कहा कि आज समाज को हाईटेक होना होगा। आज का समय कम्प्यूटर का समय है समाज को आधुनिक कोचिंग सेन्टर खोलने होंगे। तब समाज उच्च पदों पर पहुंचेगा तो समाज चहुंमुखी विकास करेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हीरालाल बिश्नोई पूर्व विधायक संचौर ने कहा कि समाज में एकता होनी अति आवश्यक है। जब समाज एक होगा तो अन्य समाज अपने समाज का आदर करेगा। खुले अधिवेशन में मुख्यवक्ता आचार्य डॉ. गोवर्धनराम शिक्षा शास्त्री ने कहा भगवान जाम्भोजी ने एक सुन्दर समाज की स्थापना की वह समाज आज अन्तर्जातीय विवाह करेगा तो यह समाज के लिए अति घातक होगा। समय रहते हुए समाज को नशा, बाल-विवाह, मृत्यु भोज अतंर्जातीय विवाह पर रोक नहीं लगाई तो इसका परिणाम बहुत ही घातक होंगे साहित्य समाज का दर्पण होता है अगर दर्पण साफ होगा तो चेहरा साफ दिखेगा अगर अच्छा साहित्य होगा तो समाज रूप अपने आप अच्छा दिखेगा। कार्यक्रम का संचालन अखिल भारतीय जाम्भाणी हरिकथा के संयोजक दयाराम थोरी हंसमुख ने किया।

❑ **मोहनलाल खिलेरी**
अध्यक्ष, श्री गुरु जम्भेश्वर , सेवक दल सोनड़ी, बडमेर (राज), मो. 9799835529

अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रवीन धारनिया ने नई ऊर्जा का संचार करने हेतु राष्ट्रीय कार्यकारिणी का विस्तार कर नई टीम बनाई है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी में नये शामिल सदस्यों को उनकी नई जिम्मेवारी भी सौपी गई। नवीन कार्यकारिणी-श्री प्रवीन धारनिया (राष्ट्रीयअध्यक्ष), श्री राजीव गोदारा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), श्री सुनील मान्झू (महासचिव), श्री पुष्पेन्द्र ज्याणी (सचिव), श्री आशीष गोदारा,चण्डीगढ़ (सचिव), श्री पवन ज्याणी, गंगानगर (सचिव), श्री सुनील माल, बैगलोर (सचिव), श्री सुभाष खिचड़,फतेहाबाद (प्रैस सचिव), श्री रितेश बिश्नोई, नोएडा (सचिव), श्री प्रेमसिगड़, डबवाली (सचिव), श्री विनोद गोदारा, हिसार (सचिव), श्री सुमित गोदारा ,कुरुक्षेत्र, (कार्यकारिणी सदस्य), श्री संजीव मांजू (कार्यकारिणी सदस्य), श्री सुमित बैनिवाल, दिल्ली (सचिव)।

❑ **सुनील मांजू**, महासचिव

श्री जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीव रक्षा सभा का विस्तार

29.08.2012 को श्री जम्भेश्वर पर्यावरण एवं जीव रक्षा जिला शाखा हनुमानगढ़, राजस्थान की एक बैठक प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विनोद धारणियां की अध्यक्षता में हुई। किसान भवन में आयोजित बैठक में बोलते हुए उन्होंने बताया की आज राजस्थान में पर्यावरण को शुद्ध बनाये रखने की महती आवश्यकता है। ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाकर जीवों की रक्षा कर, निरीह पशु पक्षियों को बचाया जा सकता है। इस सभा का मूल उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, वन्य जीव सुरक्षा एवं नशा मुक्ति रखा गया है।

पर्यावरण प्रेमियों की इस बैठक में जिला शाखा हनुमानगढ का गठन कर जिले की समस्त तहसीलों में कार्यकारिणी का विस्तार निम्न प्रकार से किया।

संरक्षक - डॉ. दलवीर सिंह बिश्नोई, हनुमानगढ़ जंक्शन, **जिलाध्यक्ष**-मनोहर लाल बिश्नोई, संगरिया, **जिला महामंत्री**- श्री विनित बिश्नोई, हनुमानगढ, जंक्शन, **जिला कोषाध्यक्ष** - श्री हनुमान सिंह भाम्भू, हनुमानगढ़ जंक्शन, **संगठन मंत्री** - श्री इन्द्रजीत धारणियां, शैरेका 7 K.S.P. टिब्बी, **वरिष्ठ उपाध्यक्ष** - श्री रंगलाल चांगड़, रावतसर, **उपाध्यक्ष** - श्री सुभाष थापन (एडवोकेट) पीलीबंगा को नियुक्त कर कार्य करने का निर्देश दिया गया। इसी प्रकार जिले की समस्त तहसीलों में अध्यक्ष व महामत्री की नियुक्ति भी की गई। तहसील शाखा - **पीलीबंगा**-अध्यक्ष श्री विनोद मांझू (21M.O.D.), महामंत्री - श्री संदीप बिश्नोई, जाखड़ावाली, **टिब्बी**- श्री सतपाल खीचड़, तन्दूर वाली, महामंत्री- श्री संदीप कड़वासरा, गिलवाला, **हनुमानगढ़** - अध्यक्ष श्री संदीप कड़वासारा, गिलवाला, महामंत्री - श्री ओमप्रकाश खीचड़, चोहिला वाली, **संगरिया** - अध्यक्ष श्री दाताराम लाम्बा - 12 के.एस.डी., महामंत्री -श्री भूपसिंह खीचड, 10 के.एस.डी, **रावतसर**- अध्यक्ष श्री कृष्ण गोपाल, रावतसर, महामंत्री-श्री ओमप्रकाश ज्याणी, रावतसर, **भादरा** - अध्यक्ष -श्री ओमप्रकाश ईशरलाल, महामंत्री- श्री हरिसिंह मांझू, करनपुरा।

जाम्भोलाव धाम! माधा मेला सम्पन्न

दिनांक 30 सितम्बर 2012 को जोधपुर जिले के फलौदी तहसील के जाम्बा गांव में मेला का आयोजन हुआ। 29 सितम्बर को रात्रि में जागरण लगाया गया। जिसमें स्वामी रामानन्द जी स्वामी रतिराम जी व अन्य सन्तो ने अपने विचार रखे। जागरण सरोवर के पास की बजाए गांव के पास में लगया गया, ताकि सरोवर व मंदिर परिसर की सफाई बनी रहे। जागरण में श्रोताओं का भारी हजूम उमड़ा हुआ था। जब भी कोई सन्त अपनी वाणी को विराम देकर गुरु महाराज का जयकारा बोलते तो उनके पीछे श्रोताओं की आवाज इतनी ऊंचे स्वर में आती कि आस पडौस के गांव के लोगों को अहसास हो जाता है कि आज जम्भोलाव धाम पर जागरण है। सुबह ब्रह्म मुहर्त में ही श्रद्धालुओं का रुख तलाब की ओर हो चला। देखते ही देखते तलाब में स्नान करने वाले भक्त तथा सरोवर की परिक्रमा व सरोवर से मिट्टी लेकर पाल पर चढने वालों की भीड़ से मेले में चार चांद लग गये। सूर्य उदय होते ही श्रद्धालुओं ने घी खोपरे लेकर हवन में आहुति देनी आरम्भ कर दी। निर्माणाधीन मंदिर की सजावट को देखकर श्रद्धालुओं ने निर्माण कमेटी की भूरि-भूरि प्रशासा की व दान भी मुठ्ठी खोलकर किया। मंदिर में सन्तो द्वारा दिनभर गुरु महाराज की साखियां व भजनों से आने वाले श्रद्धालुओं का खुब मन मोह लिया। स्थानीय लोगों ने पक्षियों के चुगे वास्ते अनाज भी खूब दान किया। बाहर से आए श्रद्धालुओं के लिए महासभा भवन में सेवक -दल द्वारा भण्डारे का भी आयोजन किया गया।

बिश्नाई समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

जाम्भाणी जन जागरण संस्थान, जोधपुर द्वारा वर्ष 2012 के अन्तर्गत समाज के जोधपुर एवं बीकानेर संभाग की विभिन्न प्रतिभाओं का सम्मान समारोह रातानाड़ा स्थित बिश्नोई धर्मशाला में आयोजित किया गया। स्वामी भागीरथदास जी आचार्य के सान्निध्य में समाज के वरिष्ठ राजनेता पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष एवं बिश्नोई महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष स्व. श्री रामनायण बिश्नोई को श्रद्धासुमन अर्पण करने के पश्चात 300 छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जेडीए चैयरमेन श्री राजेन्द्र सोलंकी एवं मध्यप्रदेश के केबीनेट मंत्री श्री अजय बिश्नोई एवं पूर्व सांसद श्री जसवन्त सिंह बिश्नोई ने प्रतिभाओं को सम्मानित कर आशीर्वाद दिया। समारोह में ओसियां प्रधान नारायणराम

डाबडी, मुकाम गौशाला अध्यक्ष सुल्तान जी धारणीया, कर्नाटक से श्री बीरबल हुबली, पूर्व आई.जी. श्री उम्मेदाराम बिश्नोई रामपाल भवाद एवं समाज के बुद्धिजीवी, पंच-सरपंच, जनप्रतिनिधियोंने समारोह में भाग लिया। संस्थान के महासचिव सुखराम ढ़ाका ने बताया कि प्रतिभाओं को नकद पुरस्कार एवं अन्य खर्चे समाज के भामाशाह पप्पूराम डारा ने वहन किया। संस्थान के अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री मोनिटंरिग सलाहकार श्री लादूराम बिश्नोई ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु प्रतिभाओं एवं मेहमानों का आभार प्रकट किया तत्पश्चात प्रसाद वितरण का आयोजन किया गया।

जाम्भाणी साहित्य प्रतियोगी परीक्षा 2012-13 का पाठ्यक्रम

30 दिसम्बर 2012 को जाम्भाणी साहित्य अकादमी के तत्तवाधान में आयोजित होने वाली जाम्भाणी साहित्य प्रतियोगी परीक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार से है :-

1. गुरु जाम्भोजी का अवतार , 2. गुरु जाम्भोजी का पारिवारिक परिचय, 3. गुरु जाम्भोजी की बाललीला, 4. गुरु जाम्भोजी का उपदेश काल, 5. गुरु जाम्भोजी के सम्पर्क में आने वाले समाज के विशिष्ट लोग एवं राजा महाराजा, 6. गुरु जाम्भोजी का निर्वाण, 7. बिश्नोई पंथ के प्रमुख धाम एवं उनकी भौगोलिक स्थिति , 8. वृक्ष रक्षा के लिए किये गये बलिदान, 9. बिश्नोई पंथ के 29 नियम

10. गुरु जाम्भो जी कृत - सबदवाणी, गोत्राचार, नवण मंत्र, पाहल मंत्र आदि।

सहायक ग्रंथ:-

1. जाम्भो जी- डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, 2. जाम्भोजी - श्रीकृष्ण खीचड़, 3. पर्यावरण संरक्षण के प्रणेता जाम्भोजी - डॉ. बनवारी लाल सहू , 4. बलिदान कथा - स्वामी कृष्णांनद आचार्य 5. जम्भसागर - सं. आचार्य कृष्णानन्द, 6. गुरु जांभोजी और बिश्नोई पंथ का इतिहास- डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई आदि।

परीक्षा हेतु आवेदन पत्र
जाम्भाणी साहित्य प्रतियोगी परीक्षा 2012-2013

फोटो

परीक्षार्थी का नाम..... पिता का नाम .....

अध्ययनरत कक्षा ..... विद्यालय का नाम .....

स्थाई पता .....

मोबाईल .....

हस्ताक्षर

नोट :- 1. उपर्युक्त आवेदन पत्र को टाईप करवाकर या सादे कागज पर लिखकर जिला प्रभारी के पास 30 नवम्बर तक जमा करवाना हैं, इसके बाद भेजे गए आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा। जिला प्रभारियों की सूची अक्तूबर के अंक में प्रकाशित है।
2. हिसार जिला के इच्छुक प्रार्थी अपना आवेदन पत्र बिश्नोई मंदिर हिसार में जमा करवाएं।
3. सभी परीक्षा केन्द्रों की सूची दिसम्बर, 2012 के अंक में प्रकाशित की जाएगी।

❑ डॉ. बनवारी लाल सहू
परीक्षा संयोजक

जांभाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रम सम्वत् 2069 कार्तिक की अमावस्या

लगेगी : 13-11-2012 मंगलवार प्रात: 7:13 पर

उतरेगी : 13-11-2012 मंगलवार रात्रि 3:37 पर

विक्रम सम्वत् 2069 मार्गशीर्ष की अमावस्या

लगेगी : 12-12-2012 बुधवार सायं 5:55 बजे

उतरेगी : 13-12-2012 बृहस्पतिवार सायं 2:11 बजे

धर्म स्थापना दिवस : समराथल, दिल्ली, अबोहर : 07 नवम्बर 2012

चिलत नवमी मेला : लालासर साथरी : 8 दिसम्बर 2012 को लगेगा

मिगसर अमावस्या मेला : नीम गांव (मध्यप्रदेश) 13 दिसम्बर 2012 व 19 दिसम्बर को शहीद बीरबलराम स्मृति मेला- लोहावट में लगेगा।

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा**, (जैसलां वाले) मो.: 094164-07290

उन्नतीस धर्म नियम

1. तीस दिन सूतक रखना।
2. पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
3. प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
4. शील का पालन करना व संतोष रखना।
5. बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
6. द्विकाल संध्या-उपासना करना।
7. संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
8. निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
9. पानी, ईन्धन और दूध को छानबीन कर प्रयोग में लेना।
10. काम,क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
11. वाणी विचार कर बोलना।
12. क्षमा-दया धारण करना।
13. चोरी नहीं करनी।
14. निन्दा नहीं करनी।
15. झूठ नहीं बोलना।
16. वाद-विवाद का त्याग करना।
17. अमावस्या का व्रत रखना।
18. विष्णु का भजन करना।
19. जीव दया पालणी।
20. हरा वृक्ष नहीं काटना।
21. रसोई अपने हाथ से बनानी।
22. थाट अमर रखना।
23. बैल बधिया नहीं कराना ।
24. अमल नहीं खाना।
25. तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
26. भांग नहीं पीना।
27. मद्यपान नहीं करना।
28. मांस नहीं खाना।
29. नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI NO. : 12406/57

POSTAL REGD. NO. L/Regd. NP/HSR/01/2011-2013
L/WPP/HSR/03/11-13

शुभ

लाभ

दीपावली

महापर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने सूचना प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 नवम्बर, 2012 को प्रकाशित किया।